काल-भैरवी

(विष्णुहरि डालमिया पुरस्कार से पुरस्कृत)

काल – भैरवी
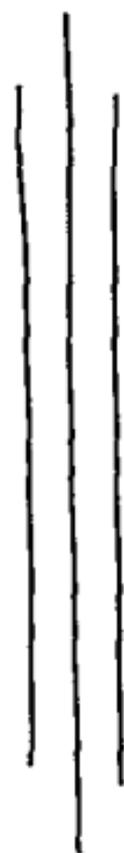
रामनिवास शर्मा

मूल्य पचास रुपये मात्र
संस्करण 1995
प्रकाशक रुपान्तर, रत्तानी व्यासों का चौक बीकानेर - 334005
मुद्रक विकास आर्ट प्रिंटस, शाहदरा, दिल्ली-32

KAL BHAIRAWI by Ram Niwas Searma Rs

दो शब्द

राजस्थानी भाषा के ऐतिहासिक तान्त्रिक उपन्यास का हिन्दी मे अनुवाद प्रकाशित करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। राजस्थानी का यह पहला उपन्यास है जिसका हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो रहा है। इसउपन्यास मे तन्त्र साधना की जितनी विशद् प्रणाली दी है उतनी किसी भी भाषा मे पढने को नही मिलती है, इस कारण इस उपन्यास का महत्त्व और भी बढ जाता है। १८वी सदी का राजस्थानी जीवन इस धारा से कितना प्रभावित था यह पठनीय है।

अनुवाद की प्रेरणा व मार्गदशन करने वाले श्री माणक तिवारी का विशेष आभारी हू जिसके सहयोग से यह काय पूरा हो सका।

श्री दिनेश रगा का विशेष आभारी हू जिनकी प्रेरणा व प्रोत्साहन से यह पुस्तक प्रकाशित हुई है।

श्री सभापति राजस्थानी भाषा साहित्य सगम (अकादमी) बीकानेर का विशेष आभारी हू जिन्होंने अनुवाद प्रकाशित करने की स्वीकृति प्रदान की।

दिनाक १५-९ ८५

रामप्रसाद शर्मा
शिक्षा प्रसार अधिकारी
शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार
बीकानेर

काल भैरवी

१
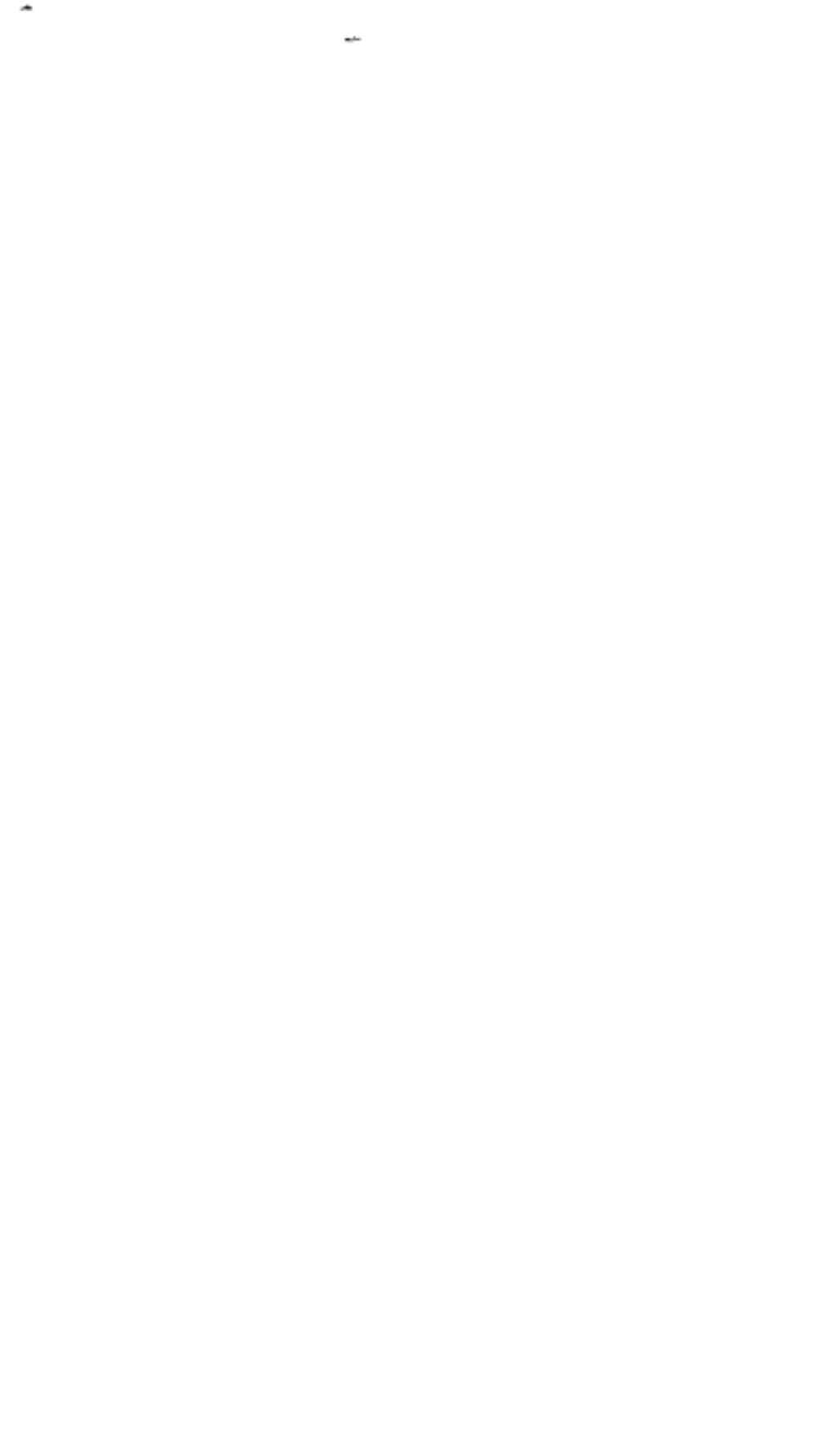
व्यास लाकमणि के दालान मे माचे पर बठा हुआ वहिया के पन्ने पलट रहा था। सूरज सिर पर आ गया था। माघ का महीना था। धूप तावड-तोड (तेजा पर) थी। कधे की कम्बल पावा पर आ चुकी थी। शरीर पर चुनचुनाहट लग रही थी पर मन इन सब वाना से बेखबर था। वह ता अक्षरो म उलझा हुआ था। किया भी क्या सकता था? मेडता का प्रसिद्ध और पूज्यनीय विद्वान, जा प्रत्यक डरे और लश्कर म जाकर कथा भागवत बाचता और दान-दक्षिणा म प्राप्त राशि स, मेडता म आकर, ब्राह्मण भोज कर देता। भाई-बधु कहते कि ऐसा समझदार मनुष्य फिर नही हाने का। वसे ता इसके सारे ही पूवज बहुत हा प्रसिद्ध थे पर व्यास की बराबरी कोई नही कर सकता। यह उन सब स अलग है। बात को धीमा, प्रेम से भरा हुआ मुस्कराता हुआ ही बोलता है। बात कहता तो लगता माना मुह स फूल झड रहे हैं। मन चाहता है कि यह बोलता रहे। इनकी पत्नी भी अत्यत समझदार और सीधी-सादी। ऐसी मधुर बोलती है कि इस कान के अलावा दूसरे कान को भी क्या सुनाई दे? उसने एक बार व्यासजी कहा 'मैं बिरादरी की लुगाइयो के पास जब भी जाती हू ता वे कहती हैं कि इसका पति अच्छा कमाने वाला है पर इस सोने क मामूली गहने तक भी बना कर नही देता। मुझे दूसरो की बातें न सुननी पडें, इसलिए आप कभी कोई सोने का छोटा मोटा जेवर बनवा दें ता अच्छा रहे।'

व्यास जी तीन चार दिन पहले ही नागौर की छावनी की तरफ जाकर सौ डेढ सौ का चढावा लाए थे। जाति बिरादरी का इकट्ठा किया। भोज का निश्चय किया। दूसरे दिन सब लोग भोज में आये। दालान में न्यात गंगा भोजन कर रही थी। घर की छत पर चढ़कर अपनी पत्नी को पास बुलाकर कहने लगे, "देख पगली, यह न्यात-गंगा भोजन कर रही है। सोने का जेवर क्या इससे भी बढकर है?' वह सारी बात समझ गई। धीरे से बोली, 'यात गंगा घर में आने से हो सौ पीढी का उद्धार हो जाता है। और भोजन करने से तो सौ यज्ञों का पुण्य मिलता है। घर बैठे ही गंगा आई है। मुझे तो सोने की कोई जरूरत नहीं है।'

मैं अभी बहियां टटोल रहा था और पन्ने पलटते समय एक जगह लिखा देखा कि जब भी व्यासजी के समक्ष कोई झगडा खडा होता तो वे भैरू के दरबार में जाकर वहां सबको एकत्र कर सुलझा देते। जब भैरू दरबार का यह वर्णन पढा तो उसके बाद इसका सारा विवरण जानने के लिए मन में उथल-पुथल मच गई। चित्त में ऐसा खटका लगा कि न तो दिन में और न ही रात में चैन लेने देता था। जी ऐसा उचटा कि सारे दिन ही डावाडोल सा रहने लगा। बहियों के कागज दौडते से दिखते, अक्षर उडते नजर आते। पर किया क्या जाय? 'भैरू दरबार' का मामला किसी भी प्रकार सुलझ नहीं रहा था। धीरे धीरे दिन ढल गया। सर्दी की रात थी। सर्दी की चद्दर लम्बी होती गया। सूर्यास्त के पूर्व ही लोग अपने घरों में सिकुड़ने लगे। पर मेरी तो भूख प्यास ही ठण्डी पड गई। यह "भैरू दरबार" यमदूत के समान छाती पर खडा हो गया जो न तो उतारे उतरता था और न ही भगाये भागता था। नींद तो ठण्ड के मारे जम गई। बहियों को इकट्ठा कर बाधने लगा तब एक पतली-सी हकीकत बही के पृष्ठ से निकली। उसे बहियों के ऊपर बांधकर रख दिया। सारा सामान बरामदे (तिबारी) में रखा। तेल का दीपक जलाया और बस्ते में से हकीकत निकाल कर पढने लगा।

मैं फाटक (फाटो) खोलकर पेमा चौधरी के घर में घुसा तो देखा कि सामने उसकी लडकी अभी सर गूंथ कर व श्रृंगार करके आ रही थी जिसकी धीमी चाल में इतमीनान का आभास था। रंग से वह काली थी

पर उस कालिमा में एक चमक थी जैसे तल में छाया। माथे की टीकी अरुण की भांति चमक रहा था। गले में बंधी टुस्सी (गले में पहनने का आभूषण) झब झब कर रही थी। कांचली पर पहनी हुई कुर्ती पर तोतावरणी बदली खेल रही थी। घाघरे (घम्बलिया) पर मयूर दौड़ रहे थे। पचरंगी ओढ़नी (लूगडी) सावन को आमंत्रण दे रही थी। पांवों की नेवरी और कड़ले चलते समय वशीकरण का मंत्र पढ़ते थे। मैं स्वयं को भूल कर विस्फारित नेत्रों से सनाहीन सा उसे देखता ही रहा। उसने अपने सीने को पल्लू से ढांपते हुए पूछा, 'किसे पूछ रहे हैं? पिताजी को? वे तो खेत गये हैं।'

एक झटका सा लगा। मुंह से अनायास ही निकल गया "क्या कहा?" मैं यद्यपि जानना नहीं चाहता था फिर भी अनचाहे ही ये शब्द मुंह से निकल गये। फिर कानों को झटका लगा, 'पिताजी खेत गये हैं।" 'कब तक आ जायेंगे?'—मैंने कहा। 'एक घड़ी रात बीते।' उसने कहा। 'मैं सरकारी आदमी हूं। चौधरी से मिलकर ही जाऊंगा।' उसने अंगुली से दिखाकर कहा— झोपड़ी (छान) में पलंग (ढला) पड़ा है उसमें ठहर जाओ। सांड को झोंपड़े के पीछे ठाण पर बांध दो। यह कहती हुई वह घर का दरवाजा खोलकर अन्दर चली गई। मैं चित्रलिखित-सा खड़ा रहा। ऊंट से जीन (पलाण) नहीं खोल सका। उसे वैसे ही ठाण पर बांध झोंपड़ी में जाकर पलंग पर बैठ गया। झोंपड़ी में हंडिया का फूटा मुंह लगा हुआ था जिसमें से हवा आ रही थी।

मैं चमत्कारी चढ़ा हुआ सा आंखें फाड़े देखता रहा कि वह फिर कब दिखाई दे। पर वह तो गायब हो गई। एक घड़ी समय बीता। न बाबा आए न ताली बजी। प्यास के मारे गला सूख गया। आंखें झपकी लेने लगीं। इतने में एक बच्चा हाथ में थाली लिये आया। ऊंचे किनारों की कांसी की थाली थी। थाली में बाजरी की दो मोटी रोटियां घी में चुपड़ी हुईं, फोफलियों की सब्जी और एक कटोरा राबड़ी से भरा हुआ था। उसे पूछा— क्या तुम्हारा नाम? 'किसन'—'कितने बरस का है?' "आठ बरस का।—'कितने भाई बहन हो?'—"दो भाई और एक बहन।"—'तुम सबसे छोटे हो?"—'नहीं मेरी बहन सबसे बड़ी' मैं

उससे छादा और एक भाई मेरे से छोटा। मेरी वहन कल ही ससुराल से आई है।"

हाथ मुह धोकर भोजन करने बठा। रोटी गजब की मीठी थी। सब्जी म चूर कर रोटी खाई और रावडी पी। मेरा पट भली प्रकार भर गया। हाथ घोकर मूछो पर हाथ फेरा व खखारा किया। मैं बोला, "ऊट को पानी पिला लाऊ।'

"आपने तो ऊट का पलाण ही नही उतारा। ऐसे ही सो गये। मेरी वहन न पलाण खोला और मैंने ऊट को पानी पिलाकर चारा डाल दिया। अब तो ऊट जुगाली कर रहा होगा। यह कहता हुआ वह बच्चा थाली कटोरा उठाकर घर मे चला गया। मेरे मन म बवडर उठन लगे कि मैं कितना मूख हू जो सारी बातो को भूल गया। मैं निरा पशु हू जो एक काली कलूटी लडकी को देख कर अपना होश खो बठा। एक सरकारी मुलाजिम यदि इस प्रकार मदहोश होगा तो हो चुका काम। चौधरी को पता चल गया तो वह नौकरी से निकलवा देगा। गाव बिरादरी में बद नामी का टीकरा फूट जायगा। जीते जी मरना पडेगा। सर म बहुत सारी बातें आ रही थी पर मन ता राजा है। वह उसके मुलावो म नही आता। धीरे से कहता है, अरे पागल! इसम क्या रखा है? यह हम कौन सा पाप कर रह हैं? देख ही तो रहा हू। देखने मे काई पाप थोडे ही है। मेरा तो दिल साफ है। धीरे धीरे रावडी का नशा आने लगा। नाक बोलने लगी।

चौधरी पमा का घर ता मेरे मरे लिय खेत का सा रास्ता बन गया। सरकारी आदमी चौधरी का भी खास आदमी। आने जान म रोक-टोक नही थी। घर बार मेर जसे ही थे। देर-सवेर आना जाना हमेशा का काम था। पटवार का काम ही एसा है। सबस प्रेम मुलाकात, रात को दरी स सोना और प्रात जल्दी उठ खेता म जाकर पमाइश करना। एसा करते-करते ही वर्षा ऋतु ता जान लगी और श्राद्ध-पक्ष आ गया।

सूय का प्रकाश आधा रह गया। उराडे मन स चल रहा था। रास्ता भूल गया अथवा मन रूठ गया, मेरी कुछ समझ म नही आया। मुझे

सामन धुए का एक छप्पर-सा उठता दिखा। पाव सीधे रास्त मे आगे बन्ते ही रहे। एक पतली पगडण्डी जाती थी। धुए का गुब्बार धीरे धीरे मोटा होने लगा। सामने एक छोटी-सी टीबडी दिखाई देने लगी। टीबडी पर एक बरामन्दा (तिबारी) बरामन्दे के पास झोपडी भी दीखने लगी। झोपडे के सामने स धुए के गोट उठ रह थे। धुए के पांवा म किंचित लपटो की चिनगारी भी दिखाई दे रही थी। कलेजा मुह को आने लगा पर दिमाग तो ठीक स काम करता ही था। यह तो रोज का ही काम है रात को घूमना इस बात का क्या विचार करना कि श्मशान-घाट या जोगी का अखाडा। धीरे धीरे डगरी ऊची उठने लगी। एकदम ऊचाई का रास्ता। थके हुए पाव जवाब देने लग पर आश्चय पिण्ड छोड ही नहीं रहा था। धीरे धीरे टीले पर चलता गया सामने देखा तो आखें फटी की फटी रह गइ।

सामने एक पर दूसरा लक्कड पडा जल रहा था। उसके चारा ओर गोबर से लिपी चौकी थी। एक भरू कम्बल पर बठा था। त्रिशूल राख मे रोपी हुइ थी। तूबी पावा क पास पडी थी। भरू के पीछे ही झोपडी थी और उसक पास बरामदा (तिबारी)। झोपडे का द्वार अधढका था। बरामन्दा (तिबारी) राम राज्य की तरह खुली थी।

बाड का द्वार आ गया। पडिया (लक्डी के टुकडे) लगाकर पेडिया बनाई हुई थी। धीरे धीरे ऊपर चला। सामने छोटी चौपाल थी। जूते खोलकर आग चला। आग की लपटा म भरू का चमचमाता मुह दिख रहा था। सर क बाल बिखरे थ योगी स ललाट पर सिन्दूर अगारो-सा चमक रहा था। जाकर भरू को दण्डवत की। धीरे से बोला, 'काल भरव महाराज की जय।' छिपकली की सी आखें खुली। वापस बन्द हुइ। नगारे का-सा स्वर गूजा "कौन इस समय ?'

मैं महाराज! गाव का पटवारी घनू।'

हू एक गहरा खडडा-सा भर गया। चुप्पी सी साध ली। घडी-दो घडा व्यतीत हुए। भरू हिले ना डोले, बोले ना चाले। मिट्टी के पुतले सा बठा रहा। मर से न उठा जाय न बठा जाय। ठार के ठाव-सा पडा रहा। मन तो करता रहा कि उठ कर वापस चलू पर पावों मे शक्ति ही

नहीं थी। शरीर सारा ही ठूठ सा अकड़ा पड़ा रहा। पेट म गुन्गुनी होने लगी। भ न की आंखें झप भप करने लगी। होठ बड़बड़ाने लगे। हाथ धीरे धीरे ऊच उठे और जोर म कहा, बाल भरथ की जय हो।"

सारा जगल कापता सा लगा। बाल भरथ की जय काना के परदे फाड़कर हिय म टकराने लगी। मुह से बोल पड़ा, "बाल भरथ की जय हो।' धीरे धीरे गूज ठहर गई। भभूत उठाकर बाला,"ले प्रसाद सा और लगा। चिमटा उठाकर कोयले भाड़े। लकड़ जोर स जलन लगा। आग की लपटा म भरे और भी भयानक लगने लगा। हाथ जोड़कर बोला, ' दशन कर लिय जाऊ ? 'जा और भैने ने वापस आखें बन्द कर ली। मैं उठकर चल पड़ा।

टीब की ढाल आ गई। धीरे धीरे गाव की ओर चल पड़ा। पाव शीघ्रता से चल रहे थे पर कानो क परदे ऐसे चोट रहे थे जसे कोई मनुष्य जोर स चल रहा है और उसकी पदचाप काना के परदा पर हथौड़े-सी पड़ रही है। चौकन्ना होकर चारो ओर देखता हू पर अधरे म कुछ भी दीखता नहा। छाती पर भार इस प्रकार बढ़ता जा रहा है जसे कोई पावपकड़ता हुआ पीछे ही चल रहा हो। दौड़ना चाहा पर जोर से दौड़ा ही नहीं गया। गाव क पास पहुचा तब दिल अपनी जगह आया।

रात नापता चौधरी के घर आया। चौधरी दालान की चौकी पर बैठा चिलम पी रहा था। दूर से देखत ही बोला 'आ गये पटवारी जी! आज तो बहुत देर कर दी। कहा ठहर गय थे ? एक साथ ही बहुत सारी बातें पूछ ली। चौधरी का देखा तब मेरा जी भरा। चौधरी के प्रश्नो का क्या उत्तर दू ? यहा तो हलक (तालुआ) ही सूख रहा था। चौकी पर चढ़ा और माच पर बठकर बोला ऐसे ही घूमते हुए भरू के दर्शन करने *चला गया था। सीधा वहीं से आ रहा हू।*

चौधरी ने चिलम का कश जोर से खींचा जिससे चिलम पर लौ उठी। मेरा चेहरा फीका पड़ गया। चौधरी चिलम देता हुआ बोला, 'अच्छा किया। मेरा मन कहता है कि अच्छा किया पर यहा तो जबदस्ती ही टप्पा पड़ गया। चिलम लेकर हामी भरी। दिल जमाया। कश खीचा तब भर कुछ ठिकाने से आया।

उस दिन दर्शन करने के बाद भैरू की पूरी कृपा हो गई। दो चार दिन बाद आना-जाना होता ही रहता। वहां जाने पर घड़ी-दो घड़ी का मालूम ही नहीं पड़ता। धर्म-कर्म की बातें होती रहतीं। धर्म-कर्म के साथ खरी खोटी भी चलती। यदि कभी अधिक काम के कारण जाना नहीं होता तो भैरू याद करके बुला लेता।

अब उसमें भय नहीं लगता। रात या दिन कभी भी जाओ या आओ वह बाबा तो वसे ही ठेने देता। पर यह बात समझ में नहीं आती कि वह कैसा आदमी है? वह बोलता है तो रुकता नहीं। चुप हो जाता है तो गूंगा ही बना रहता है। हां-हूं भी नहीं करता। पूछने पर सर हिला देता है। उसे कौन समझावे? किसी की अक्ल थोड़े ही निकली है जो उसे कुछ कहे। बातें करता है तो भ्रमित की-सी। कोई बात कहां की और कोई कहीं की। धरती की बातें करता करता आसमान की करने लगता है। कल की बातों में आज की बातें मिला देता है। कोई उसकी बातें समझना चाहे तो उसके पल्ले एक अक्षर भी नहीं पड़ने का। भैरू का मन अंधा था पर अत्यन्त मधुर। उसके पास बैठने के बाद उठने को दिल करता ही नहीं।

२

कई माह बाद वापस गाव आया तो मिलते ही चौधरी से पूछा—' भरू है कि नही ? ' चौधरी बोला—' भरू भी है और भरवी भी है। दोनो है।' मैं सोच म पड गया कि यह क्या बला है ? ऐसे ही दो चार दिन निकल गये। पाचवें दिन बाबा के दर्शन करने चल पडा।

दिन ढल रहा था। भरू वैसे ही यथास्थान बैठा था। झोपडे का द्वार अधखुला था। सुनसान भभका मारती थी। भरवी कही भी दीख नही रही थी। चारो ओर आखें फाड देखता रहा पर भैरवी कहा भी नहा दीखी। हताश हो भरू के पास जा बैठा। थोडी देर म भरू ने आखें खोली और पूछा, 'कब आये ? क्या भरवी को देखा नही ?'

मैं मन ही मन शम स भर गया पर उत्सुकता मिटी नही। बोला दो चार दिन आये हो गये है। और यहा बैठे भी काफी देर हो चुकी पर अब तक भरवी तो दीखी नहा। भरू जोर से हसा। हसी के साथ सारा सुनसान बीहड हिला। ' भरवी ऐसे कैसे दीखे। साधना करो तब दर्शन देगी।' मैं बोला महाराज साधना तो आप ही करो। हम तो ससारी हैं। दर्शन लाभ हो जाएगा जब आपकी कृपा होगी।

कृपा भीख है और साधना अधिकार का पूरा प्रयत्न, भरू बोला, ' गुरु की सेवा सब करा देगी। यह कह कर वह चुप हो गया। आधी घडी यो ही निकली। रात गहरी हो गई। चाद आसमान म कूदने लगा। चारो ओर दूधिया समुद्र हिलोरें लेने लगा।

मरू बैठा-वठा ही जारमे बोला ' भरवी।" एक ऊची-सी चीख उठी। सारा स्थान गूजा। गूज मिटने पर आवाज आई, 'आई ई ई।" जसे चारा कान एक साथ यह कहत हा कि काई आना है। हवा के साथ दूर से आती सास की आवाज सुनाई दने लगी। पदचाप काना के पास सुनाई देती थी पर आखें चारा आर दखकर भी उस नहीं दख सकी।

थाडी देर म सचमुच भरवा आ गई। मेरे पीछे स। उसे देखकर मैं आखें फाडे ही रह गया। इसम और मरू मैं कोई अ तर नही लगा। माना एक जस लग। राई घट न तिल बढे। यह औरत या पुरुष या इन दोना म से कोई तीसरा ही प्राणा यह मेरी समझ म नही आया।

मरू बोला य गाव क पटवारी हैं। बहुत दर से तुम्हारी राह देख रहे थे।

भरवी बाली, "मुझे तो मरू न पकड रखा था।'

मैं साचना रहा सुनता रहा उनके प्रश्नात्तर। भरवी, तुम्हारी माया अजीब है। तुम्हारे शब्द का अथ शब्द स मिला है। उन्ह मरू ही समझ सकता है या तुम। मुझे ता कुछ पता नही चला।

भरवी मरू स बढकर था। चलती तो पदचाप पुरुषा से भी भारी थी। मैंन उस आखें फाडकर, मीचकर पुन खालकर दखा। कभी मैंह मा और कभी भरवी का। यह दख मरू बोला पागल हो जाओग ऐस क्या दखत हो ? जगजननी का अवतार है।'

मैं बाला—"महाराज ! यह तो जानता हू, पर यह दखता हू कि मरू बडा या भरवी। महाराज मी गुनाह माफ कर दें भरवी आप स बढी-चढी लगती है।

मरू हसा। गला फाडकर हसा। भरवी भी साथ ही हसी। हसी की आवाज काना के पर्दों के पास सुनाई दी और यह ध्वनि भी आई—'सभल ! सभल ! कलेजे पर थाप-सा लगने लगी। तुम इस माया क चक्कर म मत पडा। खराब हा जायगा। मैं स्वत ही मरू के पावा म पड गया और बाला—'महाराज बचाओ बचाओ। इसक साथ ही गुमसुम हो गया। मरू ने तूबा स पानी लेकर मेरे मुख पर छिडका तब थाडे समय पश्चात मुझे होश आया। आखें मसलता-मसलता उठ बठा।

भैरू बोला—"माया से बचकर रहना ।' भैरवी छप्पर में चली गई थी। भैरू ने आशीष दी और घर जाने को कहा। मैं उठा और घर का रास्ता पकड़ा।

पूरे रास्ते यही सोचता जा रहा था कि यह क्या हुआ ? मैं खुद को अत्यन्त होशियार मानता था पर मेरी तो सारी अक्ल ही कहां चली गई, कुछ पता नहीं चला। जीभ तालू के पास इतने जोर से चिपक गई कि धक्का देने पर भी वहां से नहीं उतरी। पावों की तो जैसे शक्ति ही चली गई। आधी रात हुई तब मैं घर पहुचा।

भैरवी का एक ही भटका ऐसा लगा कि मैं तो पूरा ही लम्बा हो गया। पर मेरे मन ने हार नहीं मानी। भैरू के पास आना जाना अधिक हो गया। कभी तो लौटने में देर रात बीत जाती पर मेरा मन तो भैरू के साथ ही रमता। अधिक आने-जाने से मेरा भय जाता रहा। वह प्रतिदिन मेरी पहले दिन वाली बात को लेकर खिल्ली उडाया करता। पर मैं पूरा बेशर्म हो गया और कह देता भैरवी तुम्हें देखकर मैं तो क्या मेरा गुरु भैरू भी डरता होगा। आज भी मैं तो तुम्हारे नाम से भी काप उठता हू। पर फिर भैरू को देखकर बोला— इनकी कृपा से सब ठीक हो जाता है। मन का भूत भाग जाता है। भैरू भी हसा और भैरवी भी भैरू की ओर देखकर मुस्कराई। मेरा दिल प्रसन्न हो गया।

मैं भैरू के मुह लगा शिष्य हो गया। रात दिन के मिलने जुलने पास उठने-बैठने से एक नया नाता जुड गया, जिससे मेरा वहम दूर हो गया।

एक दिन बातो ही बातों में पूछ बैठा 'महाराज ! आप भैरू कैसे बने ?'

क्यों पूछता है ये बातें ? यह जन्म-जन्मान्तर का साथ है।" धूनी में गडे चिमटे की ओर इशारा करता हुआ बोला ' इसका साथ लगाये लगता नहीं और छुटाये छूटता नहीं। गुरु की आशीष ही इससे मिलाती और छुटाती है। मेरी बात को वह टाल गया। मैं मुह ताकता रह गया। क्या करता ? मन में सोचा, फिर कभी बात आज नहीं तो कल सही।

भैरू का मन कहीं भटक रहा था। सचमुच ही भैरू का मन भटक रहा था। वह उठकर घूमने लगा। मुख पर बडी-बडी रेखाए बनने लगी। आख

का रूप ही पलट गया। नयन भारी भारी से दिखने लगे। भरू जोर से बोला—"भरवी!"

भोपड़े के अन्दर से उत्तर आया—"क्या है?" क्या पर इतना जोर दिया गया कि छोटा मोटा मनुष्य तो उस क्या के नाम से ही डर जाता। पर मैं तो ठठेर की बिल्ली ठहरा। भरू बोला—"यहाँ आ।" वह दौड़ती आई। उसका चेहरा देखते ही भरू मुस्कराने लगा। एक नजर फेंकी कि भरू मुलमाड़ी मा गया। वह एक साथ ही खिलखिला पड़ा। भरू बोला, "और पूछो कि मैं मरू कम उना?" मैं भरू का विस्मय भरा चेहरा देख कर असमंजस में पड़ गया। गभीर चेहरा भयंकर बना और तुरत स्नेह से भर गया तथा खिलखिलाकर हँस पड़ा। एक साथ कितने ही रूप बदल गये। मन ही मन मैंने भरू को नमस्कार किया। सचमुच भरवी तुम्हारी माया अपार है। तुम्हारी एक नजर में चण्डी है और दूसरी में पावनी। भरू तो इसका एक कण है जो महामाया का वास्तविक स्वरूप समझता है। दूसरा कोई नहीं समझ सकता।

भरवी भरू के पास आकर बैठ गई। बोली "यह बिचारा रोटी देने वाली माता का लगान लेता है। यह क्या जाने पच रतन क्या हैं? चेतन पुरुष क्या है?" मरू की ओर देखती बोली यह तो अनाज की कोठी है।' जीत का एक पासा फेंका। मैं फिर हार गया। भरू भी राजी हो गया। मेरी अज्ञानता पर दोनों की नजर मिल गई परमानन्द सहोदर की तरह।

मेरे मन पर हथौड़े की सी चोट पड़ी। हार चुका पर हार नहीं मानूँगा। आज नहीं तो कल सही। कभी न कभी तो सारी बात का पता लगा ही लूँगा। मैदान छोड़कर भागूँगा नहीं।

भरू बोला "यह पशु है। इसे मनुष्य बनाना है। अपनी संगत करेगा तो आदमी बन जायगा।

मैंने मन में सोचा आदमी तो बनूँगा तब की बात पर पशु तो अभी ही बना दिया। मरू बोला, "यह सब तो नित्यप्रति का धंधा है पर इस

मरू झटका देकर उठ गया। झोपड़ी की ओर जाते हुए बोला—"मैं तो चला।" साथ ही भरवी बोली, "मैं भी आई।" वह भी चल

खाती उठी और मरू के पीछे चल पडी। मैं विचारमग्न बैठा रहा। मेरे दिमाग ने काम करना ही ब न्द कर दिया था। भ्रमित हुआ-सा काफी देर वहां बठा रहा। रेर अधिक हो गई यह सोचकर उठा और गाव की ओर चल पडा।

आसमान तारों से खचाखच भरा पडा था। ध्रुवतारा मरू के टीब पर चमक रहा था। रात ठडी सास फेंक रही थी। ग्मी (खेजडे) सू सू कर रह थे। झाडिया ठडी हो चुकी थी। दूर से मरु के टीबे पर एक दीपक जलता दीख रहा था जो कभी पीछे जाता और कभी आगे आता लग रहा था। मेरा कलेजा मुझे छोडकर भाग रहा था। पावा की पिंड लिया न पैरो को थाम रखा था पर पैर पीछ पड रहे थ। सर म अनक विचार आ रह थे पर दिमाग काम ही नही कर रहा था। सर पर पसीना आ गया। दिल का कडा कर वापस मरू के टीबे की ओर का रास्ता छोड कर सीधा ही बढन लगा।

टीब के तल तक पहुचा तो दखा कि मरू और मरवा दोनो धूनी क पास खड आरती कर रह थ। मैं विस्मित था कि यही दीपक आगे-पीछे आता जाता दिखाई द रहा था। मरा मन कितन बडे भ्रम म था कि मेरे पीछे कोई ज्योति लगी हुई है। मैं स्वय पर हसा।

मैं टाब पर चढ गया। आरता उतारते हुए मरू ने मेरी ओर दखा और खुसर-फुसर की। मरवी ने भी मरी तरफ देखा और मुस्कराई। मैं मन ही मन मर गया। पर धयपूवक बाला जाऊ भी कहा ? मेरे लिय तो यही द्वार रात दिन खुला है। इस छोड मरे लिए दूसरा स्थान कहा ?'

मरू और मरवी दोनो ही मुस्कराये और बाले—'मरू का अखाडा तो तुम्हारे लिए सदा खुला है। सचमुच मरू का अखाडा मेरे लिये रात दिन खुला ही रहता पर मैं ऐसा निकम्मा निकला कि मैरू क अखाडे म रहत हुए भी अपना मन दूसरी ओर लगाये रखा—मरवी की ओर। मैं यह जानता था कि वह मरे काम की नही है पर उसे छोड नहा सका। कभी उसकी तरफ, कभी मरू की तरफ और कभी पहली मरवी की तरफ—इन तीनों के बीच चकरीबम मा घूमता रहा।

३

दिन चलते रहे। महीने बीतते रहे। रात के बाद दिन, दिन के बाद रात। आते-जाते एक दिन सुन्दर मौका मिला जिस दिन मरवी गाव की ओर गई हुई थी। मरू बैठा मुस्करा रहा था। मैं चुप नही रह सका और पूछ ही बैठा कि आज आपको सारी बात बतानी होगी।

मरू बोला—'अरे पागल! मेरा क्या अता-पता? और आज मरवी नहीं है तब तुम्हारी बन आई लगती है। उसके सामने तो तेरी सिट्टी पिट्टी गुम हो जाती है। फिर भी तुम्हें बताऊगा कि मैं कौन हू।'

'यहा से कोई ३०० कोस दूर जीण माता की पहाडी है। पहाडी पर माता का मन्दिर है। मेले का दिन था। दूर दूर से यात्री दर्शन करने आये हुए थे। पहाडी के तल में ऊट और बैलगाडिया खडे थे। कई यात्री जाने की तयारी में थे। कई यात्री आ रहे थे। बैलो की जोत खोल रहे थे। गाडियो पर से औरतें उतर रही थी और बच्चे माताजी की जय बोल रहे थे।

'धरमू जाट ने अपनी ऊटनी को बठाया। उसकी पत्नी भारी मन से उतरी, धरमू भी उतरा। ऊटनी को एक भाडी से बाधा। नारियल लेकर दोनो दर्शन करने चल पडे। मार्ग एक पगडडी सा ऊबड-खाबड था। ठोकरें खाते, धक्के देते दोनो माता के मण्डप तक पहुचे। नारियल आगे रखा। पुजारी जोर से बोला—"यह क्या? नारियल फाड कर नही लाया? मेरी ओर क्या देखते हो?'

प्रकार के मन्त्र लिखे गये थे। आज भी जब उन्हें याद करता हूं तो मेरा मन उन अक्षरों के साथ घूमने लगता है। काल भरव अक्षरों के साथ नाचता हुआ दीखने लगता है। मरू के चित्र के सामने दीपक के पास दूध घी और पानी से भरे थी चक्र पात्र रखे थ। एक थाली में मरू का रोटा रखा था। रोटे के बीच में एक नाभि बनाई गई थी। उसके पास एक नारियल था। एक दीपक में चावल उड़द और अनेक प्रकार की पूजा की सामग्री रखी गई थी। दो आसन आमने सामने लगे हुए थे। एक पर मुझे बठाया गया व दूसरे पर जोगिन मां बठी थी। पूजा शुरू हुई।

समय बीतता गया और मैं जोगिन का पक्का शिष्य बन गया। सर्वप्रथम मुझे नेती क्रिया सिखाई। घी पीकर वापस निकाल देना मेरे बायें हाथ का काम हो गया। पद्मासन लगाये मैं रात रात भर बठा रहता। सारा ब्रह्माण्ड आंखों के आगे घूमता प्रतीत होता। वशीकरण मन्त्र से आंखों का प्रभाव ऐसा हो गया कि सामने वाले के दिल को झकझोर देता और वह मेरा हो में हां मिलाने लगता। सामने वाले का मन मेरी इच्छा के अनुरूप ही चलने लगता।

फिर जोगिन मां ने मुझे ऊर्ध्वगमन की विद्या सिखानी शुरू की। प्रातःकाल कुशा से मेरी जीभ को काटती दूध में कुल्ले कराती। ऐसे करते करते मेरी जीभ बढ़ कर आंखों तक जाने लगी। मैं जीभ को वापस तालु की ओर मोड़कर सांस की नली के ऊपर रख सांस रोकने लगा। दो दो तीन-तीन घंटे मैं ऐसे ही मुर्दे के समान सिद्धासन लगाये बठा रहता। सुषुम्ना नाड़ी चन्द्रमंडल से निकलते अमृत को चाटने ऊपर उठने लगी। अजपा जाप का ऐसा अभ्यास हो गया कि रात और दिन का भेद मिटने लगा। एक दिन आधी रात के समय में शक्तिचालन मुद्रा का अभ्यास कर रहा था। जोगिन मां सामने बठी अभ्यास देख रही थी। तभी वह आसन से उठी और बोली— मरू!

यह नया नाम सुनकर मैं चौंका। वह बोली—"कालाग्निरुद्र ऊर्ध्वगमन विद्या का देवता है। और ऊर्ध्वगमन से अमर तत्त्व मिलता है। औरत की रज के साथ बिन्दु को मिला कर ऊर्ध्वपातन करे तो वज्रोलिका मुद्रा कहलाती है और मरू अमर तत्त्व प्राप्त करता है। अब तुम्हारी साधना

का भरवी चाहिए और वह आयगी तब तुम्हारी साधना के साथ वह भी अमर तत्त्व पायेगी।' यह कहता जोगिन मा गुफा का द्वार खोलकर पहाड़ी पर दौड गई।

मैं अनागन के लख मा दौडती जागिन का देखता रहा। द्वार खुलने के कारण ठडी हवा के झोंके स मरा सारा ही पसीना सूख गया। दिल खुश हो गया। आसन पर बठे बठे ही शरीर को ढीला छोडकर तन्द्रासन लगा लिया।

दिन ढलने लगा। ठडी हवा धीरे धीरे आने लगी। पक्षी पडा की डाला पर बठकर बोलने लगे थ। दशमी का चाद पूरब म कटोरा लिय खडा था। धुए के गुब्बारे स धीरे धीरे सारा पहाड ढकता जा रहा था। मैं पश्चिम की ओर मुह किये क्षितिज का देख रहा था। जागिन की बाता से मन म उथल-पुथल मची हुई थी। दिल कहा चल रहा था और पाव कही। भ्रमित-सा पहाडी पर म चल पडा। पथरीला रास्ता पूरा हो गया तब पता लगा कि मैं तो पहाड म दो एक कोस दूर आ गया। मद हवा चलने लगी। चाद भी सूना सा दीखने लगा। पहाड का ओर वापस मुडा। कधे पर पडी कम्बल को कसकर लपटा और शाघ्रता स चल पडा।

गुफा के द्वार म प्रकाश सामने पड रहा था। फुसफुसाहट की ध्वनि बाहर आ रही थी। धीरे धीरे पाव रखता मैं गुफा के अन्दर चला गया। सामने आसन पर जोगिन बठी थी। मेरे आसन की ओर भरवी बठी थी। मैं विक्षिप्त सा आसन पर बठ गया और बोला, 'जोगिन मा तुम कब आइ ?" वह बोली, 'भरू ! मैं कब म ही बठी-बठी तुम्हारी राह देख रही हू। मैं तुझ कहकर गई थी ना कि तुम्हारी यह साधना भरवी के बिना अधूरी है। भरवी की ओर इशारा करते बोली यह भरवी है, तुम्हारी साधना का आधा अग। जसे शिव का पार्वती व ससार म पुरुष का नारी। तुम शिव हो यह शक्ति है। तुम भरू हो यह भरवी। तुम नियति और यह नियति। तुम्हारे शरीर म मन भी है और भरवी भी। शरीर म छ तरह के कोष ह जिनम तीन नारी के हैं जो तुम्हें तुम्हारी माता स मिले हैं तथा तीन कोष पुरुष के जो तुम्हारे पिता से मिले हैं। एस ही भरवी का। तुम दोनो का शरीर सासारिक नहा है। शरीर म तुम दोनो ससारी हो, परन्तु

पर तुम्हारी आत्मा की चेतन कुडली के अनुसार पशुपति हो। इसलिए तुम्हारा शरीर नाशवान होने पर भी अजर-अमर तत्त्व को पायगा। इस लिए तुम दोना का रूप अद्धनारीश्वर का है। तुम न भरू हो और न भरवी। दोनो मिलकर परमात्मा हो। तुम दोनो म पति पत्नी का भाव है—जसे शिव और शक्ति म होता है। शिव और शक्ति के सयोग से आनन्द होता है वसे ही तुम दोनो के सभोग से आनन्द होना चाहिए। आनन्द परमानन्द का छोटा भाई है। पर तुम दोनो को परमानन्द पद लेना है। इस सासारिक भोग का भोगते हुए आकाश मे विचरण करना है। अमर तत्त्व पाना है। अनाहत नाद मे मिलना है। अनाहत नाद वह होता है जो नाद ब्रह्म की साधना से प्राप्त किया जाता है।

जोगिन मा थोडे समय बाद फिर बोलने लगी—'जीव, परमात्मा शिव का अश है। अविद्या स मोहित होने के कारण जीव उसे भूल जाता है और स्वय को शिव से, शक्ति स पथक समझने लगता है। जब जीव का अज्ञान साधना द्वारा समाप्त होता है तो जीव पुन स्वय को शुद्ध शिवस्वरूप समझने लगता है।

बहुत पुराने समय की बात है मुझे गुरु लोगो से यह ज्ञान मिला है तथा वेद पुराण भी यही कहते हैं कि जब ब्रह्मा ने सृष्टि के सृजन की इच्छा कर जीवो का सजन किया तो वे सब अधूरे थ। सब विरागी थे क्योकि उनम राग का अभाव था। यह देख ब्रह्मा सिर पकडकर चिन्ता करने लगे। शिव का ध्यान किया और उन्हे अपनी समस्या बताई। जगदीश्वर शिव मुस्कुराते हुए अद्धनारीश्वर के रूप म प्रकट होकर बोले—ससार के पालन कर्त्ता देव ब्रह्मा! तुमने सष्टि रची, पर उसम नारी नही बनाई। उसके बिना ससार का स्वयमेव निर्माण नही हो सकता, अत तुम नारी को बनाओ।

ब्रह्माजी मुह बाये देखते रह गय। तब भगवान शिव ब्रह्मा से बोले—तुमने शरीर के विभिन्न अगो से पथक पृथक जीवो को पदा किया है और जननेन्द्रिय से पुरुष जाति का निर्माण किया है।

भगवान शिव ने अपनी शक्ति से नारी की सष्टि की। नारी और पुरुष की मथुनिक क्रियाओ से सारी सष्टि स्वत ही विकास को प्राप्त

हाती रही है। इसलिए उस दिन के बाद नारी जाति म भोग को प्रतिष्ठापित किया तथा मथुन स प्रजापति की सष्टि चलने लगी। पर तुम्हारा काय इस सृष्टि को आगे बढाना नही है। तुम्हारी नाभि म कुडली जाग्रत है जो लिंग के मागस रज को ऊध्वगति स ऊपर चढाकर सुषुम्ना नाडी को पार करके, तुझे और भरवी का, हृदय मे प्राणवायु है जो अग्नि को प्रदीप्त करन वाली है, वहा पहुचा दगी और ब्रह्मरध्र स गिरने वाले अमत को तुम दोना पीकर अमर तत्त्व को प्राप्त कराग तथा इच्छानुसार ब्रह्मलोक मे विचरने की शक्ति पाओगे। इस साधना मे यदि जरा सी चूक कर बैठोगे तो रौरव नरक मिलेगा और भरव भैरवी का चाला फाका पड जायेगा। नारकीय कुत्ता का सा सासारिक दुख भोगना पडेगा। यह कहकर भरवी चुप हो गई।

मैं सोचता रहा—मरू और भैरवी! आनन्द और शब्द-ब्रह्म। यह माया गुरुकृपा स मुझे मिली। मैं बोला— आपके आशीर्वाद मे मैं मरु के अनाहत नाद का सुनूगा और अमर तत्त्व को प्राप्त करूगा, इच्छानुसार ब्रह्मलोक म विचरण करूगा।'

गुरु का आशीर्वाद मिल गया। गुरु की देख रख म मैं आकाश विचरण की विद्या का अभ्यास करने लगा। धरती स तीन चार फुट ऊपर उठने लगा। पर रज नहीं मिलने के कारण मरा साधना आधी रहने लगी। फिर एक दिन जब जोगिन का दम उठने लगा ता वह बोली—'तू जा! मेरी जगह दूसरी भरवी तुम्हारी बाट जोह रहा है। वह यहा स पूव की ओर मरुता के पास मिलेगी। उसकी पहचान के चिह्न ये होंगे—दखने म इस भरवी-सी हा है और वस्त्र पर भभूत रमाये है। सुहागिन गहस्थी औरत का-सा वष है तथा पट पर तीन रखायें हैं। पहली रेखा छोटी, दूसरी उसम बडी तथा तीसरी सबम बडी और गहरी होगी। नाभि गभीर समुद्र-सा व छाती पर मेरुदण्ड होगा। चाल मे भरवी का आभास होगा, जस इसकी जुडवा बहन हो।

उसी दिन मैं उस भरवी को ढूढने चल पडा। दो सौ कदम चला तो दोना काना के पास सुनाई पडा जब मैं बुलाऊ उसी समय चल पडना। तुझे जब भी आवश्यकता हो मुझे याद कर लेना। मैं आ जाऊगी।

गाव पहुचा तो दिन एक प्रहर के लगभग चढ चुका था। पशु खेतो मे चर रहे थे। बडे-बूढे चौपाल म बठे चिलम पी रहे थे। मुझे देखते ही गाव म बातें होने लगी—पटवारी चाचा आया। मैंने प्रणाम करते हुए घर के पास ऊटनी को बठाया और उतर गया। घर के अहाते म ऊटनी को बाधकर अदर जाने लगा तब रसोई म से मा बोली—बेटा तबियत तो ठीक है ? इस बार जल्दी ही आ गया।

मैं हसकर बोला—हा मा ! काम पूरा हो गया तो दो दिन मिलने के लिए आ गया। पाच सात दिन म मेडता जाने का विचार है। वहा लगभग एक महीना लगेगा इसलिए सोचा मा के हाथ की बनी रोटिया खा लू।

कमरे म से निकलती पत्नी घूघट उठाकर इशारा कर गई। मैं तो पानी पानी हो गया। उसके पीछे चलने लगा तब तक पिताजी की आवाज सुनाई दी। मैं मा के पास रसोई की ओर चल पडा।

आवश्यक कार्यों से निवृत्त हो, रोटी खाकर अपनी मडी मे जाकर सो गया। लेट-लेटे झपकी लेने लगा। मरवी आती दीखती, जाती दीखती, दौडती दीखती, सोई हुई दीखती। मरू स बात करती सुनाई देती साधना करती दिखाई देती। चित्त भ्रमित हो गया। ललाट पर पसीने की बूदें चमकने लगी। पावो की ओर वाली खिडकी स आती हवा सुहानी नही लग रही थी। खिडकी को बन्द कर दिया। मन मे शीत जम गया। बदन टूट रहा था पर आखो म नीद नही आ रही थी। आखें फाडते फाडते जलने लगी। सारा बदन पसीने से तर हो गया। अफीम की तुग लेकर सो गया।

धीरे धीरे आखें झपकने लगी। बदन का टूटना कम होने लगा और मुझे नीद भी आने लगी। स्वप्न दीखने लगे। मरवी और उसकी छोटी बहन चौधरी की लडकी दिखाई देने लगी। मरवी अपनी छोटी बहन का मुह अपने मुह म रखकर सारी को स्वय म मिलाती हुई दो नारियो के स्थान पर एक दीखने लगी। मरवी कहती है—देख यह देख। तुम्हारे चौधरी की पुत्री, मेरी बहन, मरवी। मरव या साधना शिव और शक्ति। शक्ति आत्मा का भाग है। शिव का भाग शरीर है और इन दोनो का मार्ग

अद्वय है। यह माग ही मानव जीवन के स तुलन का है। इस माग से ही महासुख की अनुभूति होती है।

चौधरा की लडकी दीखती है, सामन खडी हुई। दोनो मरवियो के बीच मरु भी खडा है। दोना के कधा पर हाथ रखे हुए मुस्कुरा रहा है। आखें दीपक-सी प्रकाशित हैं। दोनो मरवी हस रही हैं और एक के बाद दूसरी उसम लीन होती दिखाई दे रही है। काफी देर से उनका अट्टहास सुनाई दे रहा है। काना के पर्दे फटने लगे। मैं घबराने लगा।

हडबडाकर आखें खोल देखता हू। सामने खडी पत्नी मुझ पर हाथ फेरकर कहने लगी—आज यह क्या हुआ है? कसे दख रहे हो? डरे हुए से लग रहे हो। मैं काफी देर से देख रही हू कि आपक होठ तो हिल रहे हैं, पर सुनाई कुछ नही दिया।

होश आया। दोनों हाथा से उसक कधे पकडकर सीने पर डालता हुआ बोला— 'पगली, तुझे ही देख रहा था बहुत दिना म मिली हो ना।"

—"आपकी आखो से तो लगता है जान किसी ने आप पर टोना किया हो।'—वह सीने की धडकन सुनती हुई बोली।

—तुम्हारा टोना ही ऐसा चढा है कि दूसरी की क्या मजाल जो टोना कर दे!—मैं उसकी पीठ सहलाता हुआ बोला।

—यह क्या कर रहे हैं, कोई देख लेगा।—वह बोली।

मैंने कहा—खिडकी बन्द है। काफी दिन हो गये इसलिए आज सभाल रहा हू।

वह शरमाकर चुप हो गई।

रात को ही मुझे सर्दी लगकर तेज बुखार हो गया। पाच सात दिन लग गये। खाली दवा पीता झाडा मतर करता पर शरीर ठीक नही हुआ। न तो रात को चन से नींद आये और न दिन म। एक दिन दिल बहुत ही खराब हुआ। मन ही मन मैं मरू मरवी को गालिया देने लगा। अफीम की किरची लेकर सो गया। मरवी दीखी। बोली—' एक झटके म ही डरने लग गया। और सुनेगा, मैं कौन हू? मरू कौन है?' मैं नींद म ही बडबडाया— मा मैं नही सुनूगा! मरवी बोली—जा, ठीक हो

जायेगा।" भभूत का टीका लगाया। मैं हडबडाकर जागा। सारा शरीर पसीने से तर था। बुखार उतर गया। मन म सताप हो गया कि अब बुखार नही होगा। पाच-सात दिन और निकले फिर बुखार नही चढा।

बुखार जाते-जाते बदन तोड गया। धीरे धीरे शरीर, आराम के कारण पुन स्वस्थ होने लगा। प्रात साय घर में खुले भाग मे घूमना शुरु कर दिया।

ऐसे करते-करत ही बीस पच्चीस दिन और निकल गय। मैं सारा बातो को भूल गया। अच्छी प्रकार खाना पीना शुरू कर दिया। नौकरी पर जाने का बुलावा आने लगा तो पिताजी ने चुपचाप मेडता जाकर कह दिया कि बुखार मे पडा है। ठीक होने पर ही काम पर आयेगा। लगभग तीस-चालीस दिन उसे भला चगा होन म लग ही जायेंगे और तभी वह काम पर आ पायेगा।

५

इस वष वषा ऋतु जेठ माह के समान सूखी-सूखी ही निकल गई। सारे खेत सूने ही रह गये। खेतो म हल म निकाली गई लकीरें यों ही रह गइ। उनम बाजरी फूटी ही नही। सावन आखें फाडते फाडते ही निकल गया। भादवा की तीज विरहिन की मामा मरीची लू मारती चली गइ। आश्विन की धूप लोह को पिघलाने लगी। जानवर भूखा मरने लगे। खेता म सुबह से शाम तक फिरते फिरते उनके खुर टूटने लग गये पर चरने को कुछ नहा मिलता।

गाव म पचास घरा की बस्ती थी। दो कुए थ—एक खार पानी का और दूसरा मीठे पानी का। एक तालाब था जो सूखा था। मीठे कुए का पानी अकाल पडने पर कम होन लगा। बारी-बारी स चार चार घडे पानी मिलता। रात भर कूआ चलता तब पाना मिल पाता। दिन म कुआ खाली पडा रहता। दिविध माता से पानी दिन भर कुए म इकटठा होता रहता तभा रात के समय पीन का पानी मिल पाता। खारे कुए का पानी एसा विरादजण (जहराला) था कि भरपेट पीने पर मनुष्य और पशु तुरन्त मर जाते। वह पानी सुबह शाम पशुआ को थोडा-थोडा पिलाना पडता है जिसस व मरे भी नहा पर जीना भी मुश्किल हो जाता है। तो भी उसका पनघट दिन रात चालू रहता है। घर के छोटे-मोटे काम इसी पानी से निपटाने पडते हैं।

मैंने अभी अभी ही मीठे पानी के घडे परीण्डे मे रखे और

के आगे पडी खाट पर लेट गया। आसमान सूना-सूना भभका मार रहा था। लू सूसाट कर रही थी। वदन जल रहा था। कपडा से पसीने की बू आ रही थी। अपनी कुरतरी उतारी और सिरहाने रखकर करवट वदली। सोचने लगा कि यह काम कैसे चलेगा? गाव का सारा नक्शा ही वदल गया है। सर्दी तक तो खाने का काम किसी प्रकार चल जायगा पर आगे कस चलेगा? लोग भूखा मर जायेंगे। गाव उजड जायेंगे। खेती का लगान पिछली साल का भी वाकी पडा है, इस साल क्स होगा?

दीवार के पास से पत्नी न मुह निकाला। धीरे धीरे वह छत पर आ गई। उसके कुल्हो के नीचे की नेवरी पाव पडने क साथ ही वज रही थी। अगुलियो की विछुडी ताल द रही था। मर मन पर एक भटका मारती थी मानो कामण अपने पाचा रसा को साथ लती हुई हलकारा मार रही हो। वह पास आ गई। वह सोच रही थी कि मुझे नीद आइ हुई है। इसलिए चुपचाप आकर वह मुझे आश्चर्यचकित कर दना चाहती थी। पास आकर जब वह मेरे ऊपर झुकी तो मैंने उसे बाहो म लेकर खाट पर डाल लिया। इसके साथ ही चूडियो और पावा की नेवरें खनखना उठी। माना कामदेव क द्वार पर रति की नौवत ही बजी है। वह अचम्भित हो गई। धीरे-से बोली— यह क्या कर रहे हो? आप तो जाग रहे हो? मैंने सोचा कि आपको नीद आ गइ होगी। दिन भर क थक हुए हो, इसलिए धीरे-स पास आकर आपको सहलाकर जगाना चाहती थी पर आपने तो एमा झपटटा मारा कि मैं ता सभल ही नही पाई। नाजे मा और पिताजी क्या सोचेंगे?

वह अपन हाथ नीचे करके नवरी खोलने लगी। मैं उसके गल म हाथ डालकर सीधा सो गया। वह अभी-अभी उस पार पाखास हाथ मुह धाकर आई है। उसकी अगिया म से वदबू धाडी-धाडी फूट रही थी। उसे अपनी ओर खीचता हुआ बोला— अब तो दो चार दिन म जाना ही होगा।

जान का नाम लेते ही आखा क आग गाव क भूखा मरत पशु और मनुष्य घूमन लगे। घरवाली की पीठ पर हाथ फेरा ता उसकी हड्डियां भी निकलने लगी थी। तब वह बोली—"यह क्या देख रहे हो?

मैं शर्मा गया। बोला—"देखो, अकाल से तुम्हारी भी कमर पतली होने लग गइ।"

"अपनी जाघ की आर तो देखो, वह कसी पतली होने लग गइ। मैं तो उनके पीछे ही हू।"

माथ ही आज से चार वष पहले अक्षय ततीया को जिस दिन विवाह कर घर लाया था, उस दिन इसका शरीर मोटा-ताजा था। मक्खन की सी चाल, सुमेरू की सी छाती—जिसम चोली ही कसमसाकर फटने लगती। मैं हाथ फेरता बोला—"तुम तो मेरे से वडी हो।

"धत'—वह शरमाती बोली, "लोग क्या कहेंगे? मैं तो आपका बिछौना हू।' सचमुच मेरा बिछौना आज गूदड बनता जा रहा है। मेरा मन भर गया। दो वष के अकाल ने सबको सुखा दिया।

—'इस बार फसल अच्छी होगी तो वापस वैसी ही हो जाऊगी। इसका क्या सोच कर रहे हैं?"

—'हा इस बार वर्षा म यही रहूगा।"

—"आप तो सदा ही यह कहते हो। भादव की तीज तक सूखी ही जाती है। सारी सर्दी डाफर सहते ही निकलती है।'—वह उपालभ देती बोली—"यह तो आप इस बार बीमार हो गये तब रहना हो गया। पर भाग्य की बात है कि इस बार अकाल है। नही तो मा वर्षा की मौसम का घी खिलाकर आपको स्वस्थ कर देती।

पास खिसकता मैं बोला—' तब तुम क्या करती?"

वह शम से बोली—धत!' और मेरे अन्दर घुसने लगी। मानो शर्मिन्दा होकर स्थान ढूढ रही हो। मैं हस पडा। सास की गति तेज होने लगी।

झपकी आई थी तब मुझे कोई हाथ पकडकर जगाने लगा। आखें खोलकर देखा तो भरवी खाट के पास खडी थी। सर पर त्रिपुड एक हाथ म डमरू और दूसरे से मुझे जगाती हुइ। आधी धोती कमर म बधी हुई तथा आधी छाती पर बधी थी। पावो म खडाऊ, शरीर पर भस्मी लगी हुई, सर पर बाधा हुआ जूडा ऐसे लग रहा था मानो अघोरीश्वर

शिवलिंग प्रतिष्ठापित हो। मैं डर गया। आखें फाड़ फाड़कर देख रहा था। शरीर पसीने से तर हो गया। भैरवी मुस्कुराई। मुझे क्या देख रहे हो? कभी देखा नहीं है क्या?' मेरे सीने पर हाथ रखे सो रही पत्नी की ओर देखकर बोली—'यह तुम्हारी पत्नी है। बस मे करने वाली है। सौभाग्यवती हो।' उसे आशीष देकर मेरी ओर देखती बोली— मरु याद करते हैं। शीघ्र ही आना। यह कहती हुई घूम गई। जैसे आई, वैसे ही वापस चली गई।

दूर तक वह मुझे ही चलती दिखाई देती रही। उसके खड़ाऊ की खट-खट कानों को सुनाई दे रही थी। धरती जैसे छत के बराबर हो गई हो। वह एकदम सीधा धरती पर पाँव रखती चल रही थी और मैं देख रहा था उस जादूगरनी भैरवी को, जो सभी जगह आ टपकती, बोला देने पर भी और न देने पर भी। मैं तो उसे देखकर डरने लग गया। पर जब मरु पास होता है तो उसकी एक नहीं चलती। नहीं तो वह बड़ी जालिम थी। कब क्या कर बैठे, किसी को कोई पता नहीं चलता। मरू के पास जाते ही वह सारी छकड़ी भूल जाती है और कुत्ते की तरह उसके सामने पूछ हिलाती रहती है। और यह मरू एक ही स्थान पर पड़ा रहता है। न कहीं आता है और न जाता है। बैठा बैठा ही सारे काम कर लेता है। उसके इशारे पर ही सारे नाचने लगते हैं।

मैं तो डरने लगा कि किस लिए तो वह आई और किस लिए मरू मुझे याद कर रहा है? पसीने से सराबोर हो गया। नींद उड़ गई। पत्नी का हाथ उठाकर दूर किया। वह नींद में ही बोली— क्या है?

मैं बोला— पेशाब करके आ रहा हूँ। छत से उतरकर घर के पिछवाड़े गया। पेशाब करके गाय माता के सर पर हाथ फेरा। मन ही मन बड़बड़ाया—गौमाता अब क्या होगा? वापस आकर सो गया। पर क्या करूं यह कुछ समझ में नहीं आ रहा था। पास में सोई पत्नी नींद की पोटली सी लगने लगा। कैसे सोई हुई खर्राटे ले रही है? कितनी बड़ी घटना हो चुकी और इसे कुछ पता ही नहीं है।

अंधेरी रात के बाद चाँद पीला पड़ने लगा। सप्तऋषि जड़ों में पहुँच गये। शुक्र भागता जा रहा था। रात भरपूर यौवन पर थी। चारों ओर

हवा साय-साय कर रही थी। मरवी चली गई, पर उसकी छाया अब तक दीख रही थी। मेरा मन डोलने लगा कि अब क्या करू और क्या न करू ? छेडखानी करके पत्नी को जगाना शुरू किया। पर वह नींद म ही बोली—"यह क्या कर रहे हो ? नीद तो लेने दो। क्या सारी रात एक ही काम है ?"

उसे क्या पता मुझपर क्या बीत रही है ? उस पर दया आई। भोले पन पर प्यार आया। और कान के पास मुह ले जाकर कहा—"तुम तो सारी रात खर्राटे भर रही हो और मुझे दो घडी से नीद ही नही आ रही।

उसके सर म से मोम मे पसीने की गध मिली हुई मीठी गध आई। उसके माथे की गुथाई म तिल का तेल और कच्चा मोम लगा हुआ था। उसके साथ पसीने की बू आई जिससे मन का भार थोडा हल्का हुआ।

'मुझे क्या नही जगाया ?' यह कहती वह सीधी होकर सो गई और नाक बजाने लगी। मुझे सुहाने जीवन के एक छोर पर छोड गई। उस पर मैं घूमता रहा और ठडी हवा का झोंका लेता रहा।

प्रात सूर्य की धूप लगी तब मैं जागा। शरीर कुछ भारी सा लगा। रात को मुझे कब नींद आई और कब वह गई, मुझे कुछ पता नही। मा ने आवाज दी तब होश आया। छत से नीचे आया। लोटा लेकर शौच गया। वापस आया तो मालूम हुआ कि खारे कुए पर जाते पिताजी कह गये हैं कि मुझे एक दो दिन म काम पर जाना है। बुलावट आई है। मेरा माथा ठनका कि पिताजी से मरवी मिली होगी। मन का कोना वहम से भर गया। अब मुझे जल्दी जाना चाहिए। नही तो पिताजी को मरू मिल जायगा और सारा गुड गोबर हो जायगा। मा से पूछकर जाने का दिन तय कर लिया। फिरती घिरती पत्नी को देखा। उसका मुह जाने के नाम से सुस्त हो गया। दूसरे दिन प्रात काल अधेरे-अधेरे ही दही रोटी खाकर रवाना हो गया। मेरे साथ चली माता की ममता पत्नी का प्यार और पिता का आशीर्वाद। पिताजी की आशीष के साथ नेकनीयती का पाठ, जो बडे भाई की भाति मुझे सदा ही रास्ता दिखाता और गलत राह पर जाने से रोकता।

६

मेरी ऊटनी तर चाल म चल रही थी। सूर्य तपन लगा। अकाल होने से सता म अमरे मिट्टी से भर गये थे। हल चलने की याद र सेप रही थी। खोके खेजडा की फलिया सारी झड चुकी थी और पत्तिया भाड ली गई थी। इस कारण वे ठूठ स दीख रहे थे। वे भी छाया को तरस रहे थे। गम लूए उह झकझोर रही था। हर पत्ते झड झड कर भाड बन गये थे। उनक नाचे कहीं-कहीं एक आध पशु बैठा जुगाली कर रहा था। सारा जगल सूना था। खेता का मड के पास खींप की भाडिया क्ही कहीं हरी दीख रही थी। हवा के साथ उडन वाली मिट्टी क कण भाला पर थपडी स पड रहे थे। सर और मुह पर कपडा लपेट लिया। प्यास स गला सूखने लगा।

मा[?] के मोड के पास एक हरा भरा कैर खडा था, राजा राम की भाति। छाया भी कामचलाऊ थी। ऊटनी को बैठाकर उतरा। जीन की घुडी ढाली करके लोटडी(भारी)खोली और कण्ठ गील किये। लू स पानी भी गम हो गया। लोटडी वापस लटकाकर कस दी। कैर की आर देखने लगा। पत्ते नही और करिये भी नहा। एक हरा ठूठ सा खडा था। कहीं कहीं दो चार फूल मुरभाये हुए थे। उसकी छाया के नीचे बैठ गया। छाया और धूप दाना मुह पर पड रही थी। ऊटनी घडी-घडी जुगाली करने लगी। सामने दूर-दूर तक फले धोरे चमक रहे थे।

लगभग एक घडी दिन चढ चुका था। पर लग ऐसा रहा था जस

दोपहर हो गई हो। सर जलने लगा। मन तो चुपचाप बैठा नही रहना। कभी घर की ओर भागता था, कभी मरवी की ओर। मन का एक कोना खाली था जिसमे वह बार-बार दिखाई दे रही थी। डबडबाई हुई आखें। उतरा हुआ चेहरा, गुस्से म करवट बदलती। पर मन मे चाहती कि एक बार और कह। धीरे धीरे हाथ फेरती और कभी मुस्कराती हुई आती जाती थी। पर बीच म ही मैंरवी खडी-खडी मुस्कराती दीखती। यह देखते ही मेरा मन मो हाथ नीचे बठ जाता। मैं नहा चाहता कि इसे फिर देखू। पर देखना छूट नही सकता। चौधरी की पुत्री इन दोनो क बीच अपना एक और पल्लू फटकारती आती। व्यालू (सायकालीन भोजन) लेकर आती दीखती। ऊटनी को पानी पिलाती दीखती।

इतने म पीछे से चक्रवात का फटकारा आकर लगा। मैं सारी बातें भूल गया। उठ खडा हुआ। आखें बन्द करके बठी हुई ऊटनी को देखा जो कह रही थी कि मैंने तो आज तक यह दुनिया देखी ही नही। आदमी कितना छोटा होता है ? अपने स्वार्थ मे मुझे गर्भिणी ही नही होने देता। मैं बहुत ही शर्मिन्दा हुआ कि इसे भी किसी अच्छे ऊट से ग्याभिन करा ऊगा। ऊटनी पर चढ कर टिचकारी दी। वह भी प्रसन्न होकर गर्दन ढीली कर तेज चाल से चलने लगी। मैं अब शीघ्र ही चौधरी के यहा पहुचना चाहता था। दिन अधिक चढने से पूर्व ही गाव म पहुच जाना चाहता था। लगातार टिचकारी दिये जा रहा था और ऊटनी सीधी दौडती जा रही थी।

मैं गाव के पास पहुचा तो दो पहर दिन चढ चुका था। गाव के किनारे मोठे पानी का कुआ था। उसके पास ही एक बावडी थी जो वर्षा के पानी से भरने पर गाव के लोगो क पीने के पानी की समस्या हल करती। कुए की मारण खाली पडी था। हवा से चलता हुआ भूण भूत का भ्रम करा रहा था। खेली आधी पानी स भरी थी। कुए के पास कोठे म घडोई बनी हुई थी। कुए पर चढने के लिए पश्चिम की ओर सीढिया था। सीढियो के पास कोठे से निकाल कर एक घडोई बनाई हुई थी, जिसम कोठे से पानी आता। वहा से खेली म जाता। कुए के दक्षिण म सारण थी। रस्सा आने जाने से सारण म गहरा निशान बन चुका था। सारा गाव

' —थोड़ा आराम कर लीजिए। शाम को बातें करेंगे।

करवट बदलकर चौधरी मान की तयारी करने लगा।

मैं भी सो गया। लगभग एक घड़ी दिन शेष था तब चौधरी ने जगाया, "पटवारी जी। आज ही सारी नींद लेंगे क्या ?

करवट बदल कर मैं उठा और बोला— 'क्या बताऊँ चौधरी जी ! आज तो खूब नींद आई। पता ही नहीं चल सका कि दिन कब ढल गया।'

उठ कर हाथ मुँह धोए और ठंडा पानी पीया। चौधरी के साथ बाहर आकर मन्दिर की चौकी पर बैठकर गांव के हाल चाल पूछने लगा। एक एक कर सभी आने लगे। गांव के हाल चाल बुरे हैं। लगान दो साल का बाकी है। अकाल होने से रोटी के भी लाले पड़ने लग गये। यह वर्ष कैसे निकलेगा ? पशु दिन भर जंगल में भटकते हैं पर भूखे ही वापस आ जाते हैं। गांव में घास नहीं है अनाज नहीं है। अब कैसे काम चलेगा ? सरकार का भी तकादा आने लगा है। गरीबों का हाल तो बुरा ही है। मैं बोला— भगवान सब ठीक करेगा।

गप शप चलती रही। चिलम सुलगती रही। चिलम की फूंक के साथ ही गांव के धुएं का निर्माण होता रहा। अकाल की भयंकरता धुएं के साथ ही बढ़ती रही। सारे गांव पर एक भीषण मुर्दानगी छा गई। कब सांझ हुई, कुछ पता नहीं। सूर्य पश्चिम में जाकर छिप गया। मानो सारे दिन अपना काम पूरा कर सोने की तयारी करने लगा हो। इन्सान के भाग्य में जो कुछ लिखा है उसे नये सिरे से आंकने की सूर्य भगवान ने आवश्यकता ही नहीं समझी। वह तो सारा काम अपने तरीके से कर रहे थे। प्रात-काल पूर्व में उदय होना और सायंकाल पश्चिम में अस्त हो जाना।

सन्ध्या-वेला हो गई। मन्दिर का पुजारी घंटी बजाने लगा। सारे उठ कर भगवान की आरती के दर्शन करने मन्दिर में आये। आरती पूरी हुई। पंडित ने शंख में सब पर पानी उछाला। भगवान की जयकार जोर से बोली गई और दर्शन करके सब घरों की ओर चल पड़े। मैं भी चौधरी के साथ घर आया। चौकी पर बैठा। चौधरी ने घर जाकर मेरे लिये भोजन भेजा। बीच वाला लड़का थाली लोटा लाकर मेरे सामने रख गया। मैं भूखे

देखकर अचंभित हुआ—तुम कब आई ? आज तो दिन भर म देखा ही नहीं ?

वह "मानी क्या वाले कि सुबह से क्या नही दीखी ? दो माह बीत गये। 'वापस कब जाओगी ?" यह एक एसा सवाल था जिसका उत्तर न ता वह दे मका और न उमका पिता। लड़की शरमाकर वापस दौड़ गई। मैं मुह फाड़े दमता रहा उसका चेहरा जो बदनामी की भांति काना पड रहा था लेकिन दिल की चमक से धीरे धीरे उज्ज्वल हा रहा था।

दौड़ते मन से राबडी मे चूर कर रोटी खाई। एक राटी मुह का स्वाद बदलन के लिए सागरी की सब्जी से खाई। एक रोटी खाकर घर के दालान म खाट बिछा कर बैठ गया। रात का आचल बढता जा रहा था। पर गर्मी की उमस कम नहा हुई थी। सारा बदन सलाइयो की भांति गम लग रहा था। हवा न तो हिलान से हिल रही थी, न चलाने से चल रही थी। बुगतरी खालकर खाट के सिरहाने रखी। बठा-बैठा साचन लगा।

एकाएक दरवाजे की आर देखा ता मरू की छाया दीखी। सर पर हथौडे की एक भारी चाट-सी लगी। मन ता उसके नीचे पिसने लगा। चौधरी का लडका मेत से आ गया। मुझे खाट पर बैठा देख कर बाला—पटवारी चाचा, राम राम ! कब आय ?

—आज ही आया।

—और "रीर तो ठीक है ? कुछ दुबले हो गये।

—हा भैया अकाल के समय माट काहे स हावें। कहते हुए हसा।

यह बात ता सालहा आन सत्य है कि अकाल म मोटा हान की बात ता छाडो दा वक्त की राटी मिल जावे ता भी बहुत है। वह समय आन वाला है जब किसान को एक वक्त का आटा बचाने क लिए राबडी पीकर सा जाना हागा। बच्चा का प्रात की आधी-अधूरी रोटी राबडी खिलाकर रात काटनी पड़ेगा। लोग मेना म मुरट के बीन इकट्ठे करन लगे। मुह फाडे सामने अकाल का विकराल रूप देखकर मारे ही लोग हिम्मत हार गय। लगान का वसूली का तकाजा और ऊपर स अकाल का दूमरा वप। गाव कम जोयगा ? अधिकतर किसान ता बाजरी अधिक दिन चलान के लिए उसम माठ व मुरट क बाज मिलाकर पीसके और उस आटे की राटी

व रावडी बनाने लग गये जिससे अनाज की खपत कुछ कम हो।
दुख के दिन कसे निकलें ? पशु हड्डियो के ढाचे मात्र होते जा रहे हैं। उन्हें जब पट भरने को ही कुछ नही मिलता तो दूध कहा से आता ? युवक भरी जवानी म ही बूढ लगने लगे। प्रात -साय आखें फाड फाड कर आसमान की ओर देखते कि कहीं बादल का अश दीखे पर आकाश तो विधवा की आंखो की भाति साफ था और धरती शिव की धूनी क समान जल रही थी। रात-दिन चलने वाली जलती लू लोगो को सुखाती जा रही थी।

चौधरी रोटी खाकर खखारा करता आया। उसकी आवाज सुनकर मरा ध्यान टूटा। मेरे दिल पर एक मोटी शिला पडी कि यह चौधरी खाता-पीता है पर इसके परिवार के लिए ही अनाज पूरा होना मुश्किल है फिर सुबह-शाम यह मुझे रोटी कैसे दगा ? मरी आखो क आग मेरी मा की छाया नाचने लगी। वह मुझ कसे प्रम स भोजन कराती पर उसका अन्त मन रोता कि अकाल क कारण अपने इकलौते पुत्र को भी पूरा घी नही दे सकती। आगे रोटी का पूरा जुगाड कसे बठ सकता है ? यह सोच-सोच कर ही वह थकती जा रही थी। वह नही चाहती कि कोई मेहमान आवे और एक-दो समय ठहरे। एक मैं हू जो दिन रात बिना बुलाया मेहमान बना यहा ठहरा हू और दोनो वक्त भोजन पर तयार रहता हू।

चौधरी फूक खीचता आया और बोला—क्या सोच रहे हो पटवारी जी ?

मैं बोला—चौधरी जी अकाल तो भली भाति पड गया और मैं दोनो समय आकर बठ जाता हू तथा कई दिन बठा ही रहता हू। अकाल मे परिवार का पालना भी मुश्किल है पर ।

चौधरी हसकर बोला—पटवारी जी अच्छी सोची ! जब हम भूखो मरेंगे तो आपके घर आ जायेंगे। अभी तो भगवान का दिया अनाज है। रामजी भले दिन देंगे तो गाव म एक को भी भूखा नही मरने दगा। इतना बाजरा तो कोठो मे ही भरा है। दोनो समय नही तो एक समय ही अनाज खाकर अकाल निकाल देंगे। क्या भगवान फिर भी नहीं सुनेगा ? अगले साल तो वर्षा हो ही जायेगी।

मैं नर्मिन्दा होकर चुप हो गया। आगे क्या कहूं? बोलन योग्य ही नहा रखा। मैं ता एकदम ठडा पड गया। हा, बात ता सही है। पर अपने ता अपनी निभा जायेंगे, आगे अगले अपनी खींचा और आढो। हा, मुझे अचानक याद आया कि मेरा मुझसे मिलने का उतावला हा रहा है सो उससे मिल आऊं।

खाट मे उठते हुए बुगतरी गले म डाली और ऊटना की आर चला। ऊटना का मान उस पर जीन कसा और मरू की टेकरी की ओर चल पड़ा।

७

पश्चिम का रास्ता मरू का टेकरी की ओर जाता था। गाव पीछे रहने लगा। गाव से लगभग एक कोस दूर एक बडा टीबा था पूरा लम्बा चौडा। उसके ऊपर मरू की टीबडी दिखाई दे रही थी। टीबडी के दक्षिण म एक तलाई थी जिसम कर और जाल के झुरमुट फले थे। शाम के बाद कोई आदमी उधर नही जाता था। भूत प्रेत का वहम रहता था। शाम के बाद ही वहा भयकर अधकार हो जाता। हाथ को हाथ नही दीखता। एक पतली-सी पगडडी जाती जो भयावह लगती। तलाई म एक छोटा कुआ था, जिसम साल भर पानी रहता। पानी मिश्री सा मीठा था। पर उसका पानी पीने के लिए युवक ही आया करते। मनुष्य तो उधर जहा तक बन पडता देखते तक नही।

मैं ऊटनी पर चढा धीरे धीरे उसके पास से जा रहा था तभी मन म आया कि चलकर इस कुए के हाल चाल देख।

ऊटनी पर चढा तलाई की ढाल पर आते हुए कर-बबूल से सर का साफा अटक कर गिर पडता इसलिए मन सर नीचा कर लिया। और धीरे-धीरे जाने लगा। पडो के झुरमुट से बाहर निकला तो देखा कि कुए पर एक आदमी खडा हुआ दूसरे पर पानी डाल रहा था। मैंने सोचा, यह कौन हो सकता है? इतने म मरू ने आवाज दी—आ जाओ पटवारी जी, मरवी नहा रही है। मैं बोला—नहाने दो मैं यही खडा हू।

मरवी बोली—क्यो पटवारी जी आ जाइये। मेरी काहे की शरम?

मैंने मन म सोचा—सचमुच इसकी कैसी नाम ? यह तो मर्दों मे मर्द है औरता म औरत और दोनो से परे भी है। ' हा आपकी काह की धाम ? आ रहा हू। आग तलाई की ढाल है, इसलिए ऊटनी से उतर कर आ रहा हू।

ऊटना को मडा करके लटक कर उतरा और उनकी ओर धीरे धीरे चल पडा। साथ ही चेत चेत करता जा रहा था ताकि ऊटनी कही ठाकर नहा खा जावे।

कुए के पास पहुचा तब तक भरवी नहा चुकी थी। मरू पहले ही नहा लिया था। मरू बोला—इस समय यहा कसे आये ?

मैं बोला—जब आपको मेरे स बात करनी हो ता मैं वही पहुच जाता हू जहा आप होते है। नही तो अभी चक्कर ही पडता। वहा जाता तो कौन भूत मिलता ?

मरू जार म हसा। भरवा की ओर देखकर बोला—देख, मैंने पहले कहा था न कि वह यहा आयेगा। इसीलिए मैं तुझे लेकर पहले ही यहा आ गया। नही ता इसे क्या पता ? यह भी तो भरवी क पीछे घूमता है।

मुझे आश्चय हुआ कि इसे मेरे गूढ प्रेम का पता कसे चला ? मैं सुस्त होकर दाना की बातें सुनने लगा। भरवी न कहा—मरू की बातो का विचार मत करना। य तो गप्प हाक दते हैं। इनकी बातो मे आ गये तो मेरे जसा ही कर देंगे।

मरू बोला—यह बिचारी सदा सत्य ही कहती है। कहेगी पूव की और जायगी पश्चिम का। और मेरी ओर देखकर इशारा करते हुए कहने लगा—मरू तो सदव भरवी के पीछे रहता है।

भरवी किलकारी मार कर हसी और कहने लगी—रात भर यही रहना है या टेकरी चलता है ?

मरू बोला—अपना क्या ? जहा बठे वहा टकरी। पर तुम्हारे जच गई है ता चलो।

हम तीना मरू की टेकरी की ओर चल पडे। सारे रास्ते इधर उधर की बातें करते रहे। भरवी बार-बार खिलखिलाकर हस पडती। कभी कभी तो वह इतने जोर स हसती कि सारा बियाबान गूज उठता और उसकी

हुमी के साथ ही भैरू गभीर हो जाता पर समुद्र के गभीर घाप के आग बादलो की औकात ठडी पड जाती है। कृष्णपक्ष था और चाद अभी निकला नही था। आसमान मे तारे भरे थे पर आधी घडी होने के कारण तारो की हल्की झलक ही दिखाई दे रही थी। हवा एकदम बद थी। पत्ता ही नही हिल रहा था। सारा बियावान तालाब की भाति साफ पडा था। हम तीनो भूतो की तरह चल रहे थे। मेरे पावो की आवाज केवल मुझे ही सुनाई दे रही थी। भैरू की टकरी सामने आ गई। धीरे धीरे ऊपर चढने लगे। भैरू बोला—ऊटनी का नीचे ही बाध दो।

—हा आप चलिए। मैं इसे बाधकर आ रहा हू।

दोनो चले गये। फिर मैं सोचने लगा भैरू मेरी सारी बातें जानता है क्या? नही तो वह बात क्यो करता। खर जानता है तो जाने। अपने तो भ्रम ही रहने दो। न हा कहना न ना। आग होगी सो देखी जायगी। ऊटनी को बाधकर ऊपर गया। भैरू आसन पर बैठ चुका था। मैं उसके सामने के स्थान पर बैठ गया।

—आज तुम कितनी तूरियो से नहाए?

—पचास से। क्या क्या हाथ टूट रहे है?

—नही ऐ पगली! मेरा मन कहता है अब पचास अगुल वर्षा होगी।

मैं हसा। कहने लगा—भैरू क्या मजाक करते है? जाव जन्तु तो सब मरने लगे है और आपको मजाक सूझती है?

—काल भैरव का मन्दिर है, इसलिए तुम्हे याद करते है।

इतने मे भैरवी छप्पर मे से बोली—क्या आरती नही करनी है?

—आते है। कहता हुआ भैरू उठा और बोला—कल मिलेंगे। अब जाओ भले ही।

मैं नमस्कार कर वापस चल दिया। टेकरी से नीचे उतरा तो मन मे विचार आया कि यह कैसा भैरू है? न बात न चीत। अकारण ही तकलीफ दे दी। यो कहता है पचास अगुल वर्षा होगी। भाद्रपद पूरा होने को है। अब वर्षा कहा से होगी? आसमान तो बाबाजी की तरह साफ पडा है। पश्चिमी हवा चलने लगी और अब वर्षा होगी? यह क्या कहता है और क्या नहीं राम जाने।

ऊटनी को खोलकर बठाया और चढकर जल्दी ही गाव की ओर चल पडा। दो-तीन टिचकारी दी। ऊटनी तेज चाल से चलने लगी। गाव म आया तो दो चार कुत्ते भौंके। कुए पर जाकर ऊटनी को पानी पिलाया। घर आ गया। रात दो पहर बीत चुकी थी। गाव म सब सो चुके थे। चौधरी के घर भी सारे लोग सो चुके थे। मेरी खाट तिवारी की चौकी पर पडी थी। ऊटनी को बैठा कर उतरा और जीन खाली। बुगतरी खोल कर सिरहाने रखी।

साथ सोय सखें फाड़ने लगा। नींद तो उड चुकी थी। आखें बन्द करके पलको म बहुत ही बुलाया पर वह तो नहीं आई। चाद छाती पर चढ चुका था। उसके चारो ओर चक्र बना हुआ था। मन म भ्रम होने लगा कि भरू की कही वह बात सच होगी क्या ? रात बीतती जा रही थी। आखें झपकने लगी थी। तब अचानक ही मेरे कानो म पपीहे की आवाज सुनाई दी। बात सच तो होगी पर कब होगी ? यह सोचते सोचते ही नींद आ गई।

सुबह देर स जागा। गाव सारा जाग चुका था। घर आगन म भाड़ू दी जा चुकी थी। दनाली भी फेरी जा चुकी थी। चमचमाहट करता सूय निकल गया था। मैंने सूरज की ओर देखा तो सूरज भी भरपूर चक्र म उगा हुआ था। चिड़िया मिट्टी म स्नान कर रही थी। बातें तो सारी मिल रही है पर बादल का कही नामोनिशान ही दिखाई नहा देता। वर्षा कहा स होगी ? भरू की आखो म से ?

८

सारा दिन यो ही गप्पा मे और नाम लिखने म बीत गया। काम करते-करत काली स्याही मन स गारी लगने लगी। ाम होते ही भेरू से मिलने की भूख फिर जागी। सायकाल के बाद पल ही भरू की टेकरी की ओर चल पडा।

भरू की टेकरी पर पहुचा तब तक रात काफी ढल चुकी थी। धीरे-धीरे टैकरी पर चढने लगा—यह मोचकर कि भरू क्या कर रहा है? धूनी जल रही थी। आसन खाली पडा था। भरू की तूबी चिमटे के पास पडी थी। इसम भाक्कर देखा तो भरू की छाया दीखी। मुह वापस घुमा लिया। पाव अपने आप मुड गये। छप्पर की ओर मुड गया। छप्पर का दरवाजा आधा खुला ही पटा था। थोडा सा मुह डाल कर अन्दर भाकने लगा। मरी आखें फटी की फटी रह गइ। दीवट पर दीपक जल रहा था। आगन मे तत्र मडा हुआ था।

तत्र के बीचाबीच भरवी खडी थी। सर के बाल बधे हुए थे पर वे पीठ पर खुले छितरे हुए थ। ललाट के बीचाबीच सिदूर व काजल मे खडा आख बनी हुई थी। उसके नीचे तीज के चाद की रेखा मडी हुई थी। चाद के नीचे *कुमकुम का गोल टीका बना कर त्रिशूल अकित किया गया था।* खडी आख म काजल का कोना सिदूर के साथ लपलपाट करता भभका मार रहा था। आखो की भौहो पर काजल की रेखा दोनो आर जा रही थी। तिरछी आखो से जादू निकल रहा था। एक हाथ शिवलिग की मुद्रा

म था और दूसरा उसके नीचे जलहरी की मुद्रा मे था। भरू सामन बठा जाप कर रहा था। भैरवी की तीसरी आख मे से एक लपट-सी निकलकर मेरी ओर चली। मैं समझ ही नही सका कि क्या करू? मैं तो सीधा ही धुन हाकर वैठ गया। मरी आखें पहले तो विस्मय से फटी रही फिर भपा-भप करके मुद गइ।

कितनी रात बीती, मुझे कुछ पता नही चला। मेरी आख खुली तब मैंने देखा कि मेरा सिर भरवी की जाघ पर पडा है और उसने पुत्र की तरह अपने स्तन के अग्रभाग से मरे मुह मे पानी-सा कुछ डाला। भरू उसके पास बठा घूनी की आर देख रहा था। मैं भरवी के मुह की ओर देखने लगा। आखें फाड फाड कर दखा, पर इसका वह रूप तो कही छिप गया। और वह नित्य वाले रूप मे मेरे ऊपर झुका हुई मातत्व का हाथ मेरे ललाट पर फिरा रही थी। वह हसी और बोली—भैरू, तुम्हारा बच्चा जाग गया। मेरी ओर ऐस क्या देख रहे हा? इस धरम के बाप ने आज तुम्हे बचा लिया नही तो यहा तुम्हारा शव भी दिखाई नही देता।

भरू हसा और अपनी तूबी म स पानी मरे मुह म डाला। मैं लेटे-लेटे ही पानी पी गया। मुझे अपने शरीर मे एक चेतना सी घूमती महसूस हुई। और मैं उठकर बठ गया। भरवी माता के चरणा को छूकर बोला—मा!

भरवी बोली—चुप रह बेटा! तुम्हारा सब ठीक हो जायगा। भविष्य मे कभी ऐस मुझे मत देखना। तुमने तूबी म देखा तभी भरू ने तुम्हे देख लिया था, नहीं ता भस्म हो जाता।

मैंने भरू की आर हाथ पसारा। भरू हसा और बोला—उठ, सामन बठ। यह क्या रूप बना रखा है? इतना बडा हो गया है। मैं चुपचाप जाकर भरू के सामने आसन पर बठ गया। भरू भरवी को अपन घुटनो पर सुलाता हुआ बोला—तू सा जा। अब मैं भरवी मुद्रा लगा लू। और मेरी ओर देखकर कहा—यह बात किसी को मत कहना कि तुम्हारे साथ आज क्या हुआ और तुमन क्या देखा? अब जाकर—हाथ का इशारा करते हुए बाला—वहा एक लूकार बिछा है उस पर सो जाओ। सूर्योदय -

क बाद गाव चले जाना।

मैं चुपचाप गूगे की तरह उठा और जाकर लूकार पर सो गया। लूकार पर पडत ही नीद एस आई, जसे सौ कोस पदल चल कर आया होऊ।

६

दिन निकलते रहे अर ढलते रहे। दिन रात आंधियां सूसाट मचाती रहीं। अकाल का रूप निरंतर भयावह होता गया। एक दिन मैं तिबारी में बैठा कर का हिसाब लगा रहा था तो देखा कि सामने दालान में एक चिड़िया मिट्टी में स्नान कर रही थी। मेरे ललाट में तीन सलवटें आ गई। भैरू की बात याद आने लगी—इस वर्ष पचास अंगुल वर्षा होगी। फसल अच्छी होगी, पर कब ? जब मारे मर चुकेंगे ? रांड मयानी होगी पर खसम के मरने पर। वर्षा होगी पर गांव उजड़ने पर। हाथ का काम हाथ में रह गया। दालान में पड़ी रही धूप से आंखें चौंधियाने लगीं। आंखें बन्द करके अंगोछे में पोंछने लगा तो ऐसा लगा जैसे मरवी सामने खड़ी कह रही हो कि अब तक विश्वास नहीं हुआ ? वर्षा तो होगी आगामी दो चार दिन में ही। यह कहती वह वापस अदृश्य हो गई। मैं मुंह फाड़े द्वार की ओर देखता रहा। यह क्या हुआ ? मैं भ्रमित-सा बैठा रहा। सामने कुछ होता तो दीखता। सामने द्वार सूना पड़ा था। धूप भयंकर तेजी में थी। उठा और लोटड़ी में से पानी लेकर मुंह धोकर पीछा फिर थोड़ा पानी पीया। होश आया पर कुछ समझ में नहीं आया कि यह क्या बात हुई ? हार कर उठा और आंखें बन्द करके खाट पर लेट गया। उल्टे सुल्टे स्वप्न से आते रहे और ऐसे में पता नहीं कब नींद आ गई ? हड़बड़ा कर उठा तो दिन ढल रहा था। मुंह धोकर पानी पीया और पैदल ही भैरू की टेकरी की ओर चल पड़ा।

दिन ढल गया था पर धूप अभी भी तेज थी। बदन जलने लगा। घमौरियों में जलन होने लगी। एकाएक विचार आया कि तलाई की ओर से होता हुआ चलूं। तलाई की ओर के रास्ते से चला। धीरे धीरे ढलान की ओर बढ़ने लगा। मिट्टी कम होने लगी और पक्की भूमि आ गई। कैर खेजड़े व गूंदी के पेड़ सामने आने लगे। धरती की ढाल से ठंडी हवा का झोंका आया। कहीं कहीं कैर की जड़ें खूंटों के समान निकली हुई थीं। सावधानी से चलता हुआ तलाई के पास पहुंचा तो कुंए के पास भरू बैठा दीखा। मन में सोचा यह तो भूत की तरह तैयार है। जहां भी जाऊं तैयार रहता है। इतने में आवाज सुनाई दी—आइए कान्ह कुंवर जी, मैं आपका ही इन्तजार कर रहा था। बहुत दिन बाद आये।

पास जाकर प्रणाम किया। कुशल क्षेम पूछी। चारों ओर देखा पर मरवी दिखाई नहीं दी तो पूछा—मरवी कहां है ?

भरू हंसा और बोला—यह तो मैं भी तुम्हें पूछ रहा था कि मरवी कहां है ? आज तो दो घड़ी से यहां राह देख रहा हूं। कहीं दिखाई नहीं दी। मैंने सोचा शायद तुम्हें पता हो।

मैं सोचने लगा कि यह कैसे हो सकता है ? यह क्या गड़बड़ है ? मुझे सोच में देख भरू बोला—पहले ठंडा पानी पीओ। फिर सोचना मरवी कहां गयी है। प्यासा मरता क्या करता ? आंख लगाकर सामने बैठ गया और भरू ने अपनी तूंबी से ठंडा पानी पिलाया। भर पेट पानी पीया और मुंह पर पानी का छपाका मार कंधे पर से अंगोछा उतार कर मुंह पोंछने लगा तो इतने में कान में जोरों से खिलखिलाहट आई। मैं होश में आ गया। मरवी की चतुराई पर गुस्सा आया पर वह सयानी तथा समझदार थी इसलिए बात पलट कर बोला—मरवी तुम्हें भरू कब से ही खोज रहा है और मैं भी दो घड़ी से तुम्हें खोज रहा हूं। तुम कहां गई थी ?

मरवी मुस्करा कर बोली—मैं तो कारकुनजी को झलक दिखा कर आटा लेने चली गई थी। वहां काफी समय लग गया। दिन ढलने लगा तो भागती हुई इनके पीछे पीछे आ रही हूं। मेरी ओर इशारा करके बोली।

मैं सोचने लगा। झलक दिखा कर मेरे पीछे पीछे आ रही थी। मैं

तो कुछ समझा नही। भैरु की थार दम हाथ जोडकर बोला—आप दोना की बातें मेरी समझ म नही आती। और भरवी की ओर इशारा करके बोला—यह महामाया है, शक्ति है। इसके बारे म जब भैरू ही कुछ नहीं समझ सकता तो मैं अक्ल का आछा आदमी क्या समझू ?

दोनो एक साथ हस पड़े।। मैं भी उनके साथ ही हसने लगा। थोडी देर म बात आई-गई हो गइ।

साझ होन लगी। तलाई म उससे पहले ही अधेरा छान लगा। भरवी हम दोना के हाथ पकड कर बोली—चलो। और वह चलन लगी। उसने ज्यो ही हाथ पकडा, मेरे सारे बदन म साप-से रेंगन लग। पाव डगमगान लग। ऐसा लगने लगा जस मैं एक तोला अफीम खाकर चल रहा हू। कान सुन रह थ। आखें देख रही थी। पाव चल रहे थे पर सर काम नहीं कर रहा था। रस्सी स बधे बल की तरह चलता रहा। भैरु बोला—भरवी, तुम इसे मारोगी क्या ?

—नहीं, इस अपनी बात पर विश्वास नही है।

—अरे पगली! आज इसे क्या! किसी को भी मुझ पर विश्वास नहीं है ?

—फिर तो यह काम का आदमी है। तुम्हारा पक्का शिष्य है।

मुस्करा कर उसने मेरे गल के पीछे की कोई नस दबाई जिससे मुझे ऐसा लगन लगा कि मेरे शरीर म सारे साप एक साथ ही शात होने लग। मैं स्वयमेव चलन लगा।

टेकरी पर पहुचकर भरवी झोपडे म चली गई। भैरू पश्चिम की ओर मुह करके अस्त होत सूर्य को देखने लगा। मेरे कान झोपडे के अन्दर की खटपट सुन रहे थे और आखें भैरू की ओर लगी थी। एकाएक भैरू बोला—अरे यह ढोंग क्यो करता है ? तेरा मन तो और कही घूम रहा है। अभी तक तू समझ नही रहा है। यह शक्ति से सम्पन्न महामाया है। इसके चक्कर मे मत आ, यह मार डालेगी।

मैं शम स मरने लगा। यह इच्छा होन लगी कि टेकरी फट जावे तो उसम समा जाऊ। न तो टेकरी फटी और न मैं उसम समाया। मैं तो इन दोनो के बीच चक्कर खाऊगा। इतने म भैरू ने जोर से आवाज दी—

भरवी, यह देख क्या है ? अपन हाथ स पश्चिम की ओर इशारा किया।

भरवी एक सास स ही दौडती हुई आई और उसक पास खडी हो गई। भरू ने एक हाथ उसके कधे पर दूसरा स्तन पर रखा। भरवी भी उधर एकटक देखने लगी। मैं बच्चे क समान उन दोनो को देखने लगा। आसमान की ओर देखा तो मुझे वह कुछ नही दीखा। सून आसमान म वे जाने क्या देख रहे थ ? मैं विक्षिप्त सा उन दोनो को देखता रहा। मेरे मन म विचार आया कि मैं तो आदमी ही नही हू। पुरुष और नारी का रिश्ता ही नही समझ पा रहा हू। नारी के शरीर का नया सिरे स आकना होगा। मैं एक बच्चा हू जो कुछ नही समझता। दोनो आखें फाड फाडकर देखने लगा। इतने म देखा कि वहा भरवी नही खडी थी। भरू बस ही खडा था। आखें बार-बार रगड कर देखा तो भरवी झोपडे की ओर स आती दिखाई दी और बोला—भरू देखते हो ? यह तो वर्षा है।

—हा, यही देख रहा था।

मेरी ओर देख कर मुस्कराकर बोली—घर नहा जाओग क्या ? दूध खीचडा खाना हो तो यही खा लना। धून म पक रहा है।

मैं दण्डवत करक चुपचाप गाव की ओर चल दिया। रात एस ही जलती रही। लूए रात दिन चलती रहीं। पसीना बदन म निकलता रहा। मिट्टी उडती रही। पानी तो आखो का ही सूखता रहा। आसमान सूखे मैदान की तरह पडा रहा। आधा ऊची चढ चुकी थी। तारे आन्धी म स झाकते भूखी आखो म लग रहे थ। रात कानी थी।

थोडे दिन बाद अमावस्या आती थी। उसका प्रभाव पहल हो सार गाव को घेरने लगा। मौत का साया-सा सारे गाव पर फला था। हवा चल रही थी। मैं दालान म पडा सोच रहा था कि अब जीना कस होगा ? भरू तुम्हारी चाल अजीब है। तुम भरवी क चक्कर म हो और वह तुम्हारे। और मैं तो तुम दोनो क बीच म चक्कर चढा हुआ सा घूम रहा हू। उमस बढती जा रही थी। रात दो घडी बीत चुकी थी। नागारण हवा बद हो गई। उत्तर की हवा चलन लगी। सोचते सोचते कब मुझे झपकी आ गई कुछ पता नही चला।

पौ फटने लगी, तब मैं जागा। आखें फाडकर चारो ओर देखा।

औरत चक्की पीसने लगी थी। गाय-बछड़ा का काम करने लगी थी। आसमान म सफेद बादल छितरे हुए-से थ। उत्तर की आर से आती ठडा हवा शरीरक लगी ता कुछ राहत मिली। करवट बदलकर फिर सो गया।

चौधरी प्रात काल शातान म दँतानी फेरन लगा तब मैं उठा। शरीर भारा-सा था। खाट अन्दर निवारी म रखी। चौधरी म राम राम करके जरूरी काम निपटाने हेतु कुए की आर चल पड़ा।

१०

हवा धीमी होती गई। दो और एक तीन तीन और एक चार करते-करते दिन निकल गया। सारे दिन लूए या हा चलती रही शरीर जलता रहा पसीना छूटता रहा। भूख की भयंकर छाया सारे गाव को डराती रही। अबकी बार तो मनुष्यों की लाज मुश्किल से ही रहेगी। गाव ही खाली करना होगा। गाव छोडकर जाएगे तो जाएगे कहा? कही जगलो म भूखा मरना पडेगा। लोगो की हालत दिनोदिन और अधिक खराब होती गई। देखने भर को भी हरियाली नहा रही। जहर खाने को भी पैसा नही रहा। लोग जीयेंगे तो जीयेंगे कैसे? अब तो राम ही रक्षक है।

दालान म सोया सोया मैं सोचता रहा कि अब क्या करू और क्या न करू? मैं ढोता जाने से पहले घर जा जाऊ नहीं तो फिर कई दिन गाव जाना होगा नही। आसमान म सफेद बादलो का झुड नाच रहा था। दूर पपीहा जोर जोर से बोल रहा था। आखें झपकने लगी। कब नींद आई कुछ पता नहीं चला।

रात दो प्रहर बीत गई, तब हडबडा कर उठा। बादलो की काली घटा उमडी हुई थी। काले बादलो म से बिजली चमक रही थी। हवा बन्द हो गई। बादल कह रहे थे कि हम तो आज ही बरसेंगे। बिजली की चमक से खेतो के मयूर बोलने लगे। पशु रस्सी तुडाकर भागना चाहते थे। गाय भैसो को खोलकर दालान से बाहर निकाल दिया। ऊटो और बलो को खजडे के नीचे बाध दिया। यह सारा काम पूरा होने से पहले

ही वषा की बूदें पड़ने लगी। मैं भी खाट उठा कर अन्दर चला गया। इतने में तो मोटी मोटी बूदें पड़ने लगी। नाली से पानी बहने लगा था। एक घड़ा दिन चढ़ा तब तक वर्षा अच्छी तरह होती रही। पानी की रेलम-पेल हो गई। तालाब लबालब भर गये। दिन भर ऐसे ही छीटे पड़ते रहे और शाम का अधेरा होते ही फिर वर्षा होने लगी। रात भर ऐसे ही पानी पड़ता रहा, कभी जोर से और कभी धीमा। यह घटा सकड़ों कोस दूर भली प्रकार बरसी।

प्रभु तुम्हारी माया अपरम्पार है। तुम्हारे रहते गाव भूखो कैसे मरेंगे? उन्हें तुम्हारा ही सहारा है। गाव वालो से पहले ही कह देते तो सब पहले ही तैयार रहते। अब बेचारे कब हल तैयार करेंगे और कब खेत जोतेंगे।

दो घडी दिन चढा तब तक बादल फट चुके थे। सूर्य भगवान के दर्शन होने लगे। तालाब पानी से भर गया था। सब लोग अपने-अपने खेतो को सभालने चल गये थे। शाम तक हलो को तयार कर लिया। बीज माग कर ही पूरे कर लिए थे। बाजरी को बोने की मौसम तो निकल गई इसलिये बाजरी थोडी ही बोयी पर मोठ, मूग और ग्वार अधिक बोये।

मेरे गाव की ओर भी अच्छी वर्षा हुई। यह समाचार मुझे मिल गया। लोगो के मुह पर वर्षा के साथ ही चमक आने लगी थी और उन की प्रसन्नता की कोई सीमा ही नही थी। निकम्मे बैठे दिन भर गप्पें मारने वालो को अब समय ही नहा था। धीरे धीरे गाव खाली होने लगा। सब लोग ढाणियो में रहने के लिए चले गये। घर का एक-आध आदमी शाम को गाव में आता, घर-बार सभाल लेता और प्रात वापस खेत चला जाता। काम काज के दिन आ गये। किसी के पास भी समय नही था।

मेरे भी पूरा काम बढ गया। सबेरे खेतो में जाना पड़ता था। किसने कितना खेत जोता है क्या बोया है पूरा हिसाब रखना पडता। मेरा चौधरी भी अपने सब बच्चो को लेकर ढाणी चला गया। मैं दिन भर खेतो में घूमता रहता। कभी कहीं रोटी खा लेता और कभी कहीं। ऐसे करते-करते आश्विन समाप्त होने को आ गया। श्राद्धपक्ष बीत

सारे खेत हरे भरे थ। मेरा काम कुछ ढीला था। खेतो की निराई होन लगी।

सायकाल मैं घर पहुचा। दखा कि घर के क्या हाल चाल हैं। मुझे चिन्ता हुई कि घर म कोई है अथवा नही? ऊटनी को बठाकर जीन उतारा और उसे चारा देकर घर का का द्वार खोला तो रसोई से सुनाई दिया—कौन होगा?

—यह तो मैं हू।

—आप आ गये क्या?

—हा।

—भोजन करेंगे?

—हां।

—थोडी दर मे ला रही हू।

मैं दरवाजा बन्द कर वापस आया और हाथ मुह धोकर चौकी पर बठ गया। रात घिरन लगी। ठडा हवा ने पसीना सुखा कर थकान मिटा दी। मन मौजी होता है। वह कभी चैन से नही रहता। थोडी देर म वह थाली म रोटी और ककडी की सब्जी लाई और मरे सामन रखी। मेरी आखो के आग अधेरा सा आ गया। थाला पास मे खिसका कर भोजन करने लगा। वह जाकर पानी का लोटा और रोटी ल आई। इतनी देर म मेरा चित्त कुछ ठिकान आ गया।

—मैंने ता तुम्हे पहचाना ही नही। आज तुम कस आ गइ?

—पिताजी न कहा था अब घर की सभाल करना है। आपका खेता का काम भी कुछ कम हो चुका है जिससे सुबह शाम आपके लिये रोटी भी बनाकर रख दिया करुगी।

रोटी खाकर मैं चौकी पर खाट बिछा कर बठ गया। वह थाली लकर घर का काम निपटान चली गई। मैं जाती हुई का पीठ देखता रहा। जब उसन घर म जाकर दरवाजा बन्द कर लिया तो मेरी आखो क आगे भी फाटक लग गया। मेरा मन कुरेदने लगा। इस भरवी के कपडे पहना दिये जाए तो कौन कह सकता है कि यह भरवी नही है और भरवी को इसके कपडे पहना दिये जाए तो कौन पहचान सकता है कि यह कौन है? मुझे

कभी तो उसके मुह पर मरवी दिखता और कभी मरवी उसके कपडे पहने दीखता। मेरी आंखों के आगे वह ओढनी फटकारती दीखने लगती जिस पर सावन झूम रहा था। पोमचा ओढे था। उसकी कंचुकी के ऊपर कुर्ती था। पीठ फेरते समय कंचुकी के कसन (बंध) दीखते। सामने होती कंचुकी में अभ्रक के टुकडे चमकने लगते। उनके नाच पडे से उठे हुए स्तनो के अग्रभाग फटे रहे थे। गले में पहनी हुई लड स्तनो पर झूल रही थी। ठूमा में पिराई हुई चांदी गले पर चमक रही थी। अनार से होन पर मानी के से दान चमकते थे। तीखा नाक कजरारी आखें, कान तक जाती भौंहें, ऊंचा, चौडा ललाट, दामण-सा मीठा लगता था। एक हाथ से आंचल रखना और दूसरे से पल्लू का फटकारनी तो ऐसा मालूम पडता कि मानसेतु का झंडा फहराती था। धीमी चाल जादू-सी लगती थी। मैं आखें फाडे रखता रहता यह निखरा हुआ रूप सावन-सा सुहाना लगता। पर बीच-बीच में हो घोनी लपट मरवा मुस्कराती दीखती। यह क्या करने हो? यह मरवी है। मैं आखें फाडे देखता रहता। वह छाया आखो से ओझल हो जाता। मन में खलबली मच जाती। आखें बन्द कर पडा रहता। रात ऐसे ही बीत जाती।

११

वर्षा होने से थोड़ी ठंड बढ़ गई थी। दिन में गरमी बड़ी तेज थी। रात ढलते ही चद्दर पांवों पर आ जाती। गांव के सारे लोग खेतों में चले गये। ढाणियों में रहने लगे। घर का एकाध आदमी गांव में नमक मिर्च आदि लेने अथवा घर संभालने के लिए दो चार दिनों में आ जाता और प्रातःकाल वापस चला जाता। मेरे दिन मेलों की मेड़ें नापते नापते निकल जाते और रातें तारे देखते देखते।

एक दिन दोपहर में मेरा मन उदास हो गया। मैं वापस गांव आ गया। ऊंटनी को बांधकर चारा लेने गया तो देखा कि वह घर के पीछे धूप में एक पत्थर पर उकड़ू बैठी सिर धो रही थी। उसका घाघरा व ओढ़नी एक हाथ दूर पड़े थे। उसके काले केशों में से चूती छाछ के के साथ मट की मीठी मीठी गंध बिखर रही थी। वह देगची में से बार बार कटोरी से पानी लेकर अपने सिर पर डाल रही थी। बालों को हाथों से गहरा निचोड़ा और अपने शरीर पर पानी डालने लगी। मैं थोड़ा टेढ़ा हो गया। कमर तक लिपटी ओढ़नी को जांघों पर इकट्ठा करके सीधी बैठ गई। वह बार-बार अपने शरीर पर पानी डाल रही थी और साथ ही पांवों की ऐड़ी भी रगड़ रही थी। उसके हाथ जब स्तनों पर होते हुए कमर तक आते और फिर जांघों पर चलते तो मेरे मन पर सौ-सौ बाण एक साथ चलने। मेरे राम खड़े होकर पत्नी से मिलन हेतु मचल उठते। मैं वापस घूम गया। धीरे धीरे चौकी के पास आया, पर मन

ता अत्यन्त भ्रमित हो गया। थोडी देर में ही मैं वापस चल पडा। ऐसे हो जाना ठीक न समझ कर खखारा किया और ठडे-ठडे पाव धरता आगे बढा। इतने में वह कपडे पहन कर पिछले दरवाजे में घर मे घुसते हुए बोली—'कौन ? कारकुन जी ?"

"हा।

आज जल्दी कैसे आ गये ?

'ऐसे ही तबियत ठीक नही है।

'मैं ऊटनी का चारा दे दूगी आप चलिए।'

मैं वापस आकर तिवारा में खाट पर पड रहा। थोडी देर में वह कटोरी में छौंका हुआ पानी लाई और कहा, यह पीकर सो जाइए। तबियत ठीक हो जायगी।' कटोरी के साथ ही उसकी कलाई पकड कर बोला 'थोडी देर यही बैठो तुमसे बात करना है।'

वह शर्म से मरने लगी। मैं उसे खाट पर बैठाना चाहता था। पर वह तो धम्म से नीचे ही बैठ गई और जमीन कुरेदने लगा। उसकी ठोडी पकडकर मुह ऊपर किया—उसकी आखें भरी थीं। उसका सारा यौवन उनमें झांक रहा था। उसके मुह के पास ज्यो ही मैंने अपना मुह किया तो वह बोली, 'यह क्या कर रहे हो ?' हिजडे हो जाओगे !'

इसके साथ ही उसकी आखो से एक टेढी दृष्टि मेरे शरीर पर दौडने लगा। मैं एकाएक ही निढाल होकर खाट पर गिर पडा मानो कितने ही दिनो से बीमार पडा हू।

उसकी दुधारी मार से मैं घायल हो गया। कामण मार से विचलित हुआ और दुर्गीप से घबरा उठा। वह चुडैल-सी लगी जो शरीर भी खाती है और साथ भी सोती है। हाथ की पकड ढीली होते ही वह भाग कर घर में चली गई। मेरा सारा शरीर पानी-पानी हो गया। मेरा गला सूखने लगा। लोटडी सामने खूटी पर टगी सीख रही थी पर उठकर पानी पीने की हिम्मत नही हो रही थी। छौंका हुआ कटोरी का पानी भी लीप हुए आगन मे बिखर गया था। मैं लोटडी को देखता था तो उसमें कभी तो घरवाली को देखता और कभी मरवी को। आखो के आगे अधेरा आ रहा था। ऐसे ही पडे-पडे सारा दिन बीत गया। सध्या-वेला हो आई।

वह पानी का लाटा लकर आइ और बाली, 'अब तो उठिये ! लीजिये यह पानी लाइ हू । मुह धाकर पानी पीजिये । थाडी दर म खाना ला रही हू ।' ये सारी बातें एक सास म कह कर वह लोटा रखकर वापस चली गई । दोपहर मे जस काई बात हुई ही नही । उसके मुह पर स्वाभाविक मुस्कान थी । मरे मन म कुछ हिम्मत बधी । उठकर मुह धोया और फिर पानी पीया । जस जसे पानी मरे पेट म पहुचा, मरी सारी नसें एक बारगी ही पानी क साथ सचत हो गइ । जस अफीम लेने स होती हैं । उसके हाथो से अमृत की बूदें आती हैं आखो स जहर बिखरता है और जुबान से जीवन बहता लगता है । पानी पीने के साथ ही मैं दोपहर की घटना को भूलने लगा । मुह पर फिर से मुस्कान आने लगी ।

रात घिर आई । अधेरा धीर धीर पाव रखता आने लगा । चौमास के हम उडने लग । दीए के पास कभी कभी दीमक उडते दीखने लगे । धीमी हवा क साथ तारई की मीठी सुगध आ रही थी । बाड म उग हुए आक व धतूरे हवा से डोलते तो अधरे म भूत स लगते । आसमान सुहागिन की आशा-सा काप रहा था ।

मैं चौकी पर बैठा हुआ कभी आसमान की ओर, कभी घर क दरवाजे की ओर तथा कभी बाड क द्वार को दख रहा था । य तीनो ही सूने थ । गाव मे सुनसान होने लगी थी । ढाणी स आने वाले ढाकर भी चुप थ । ठडी हवा क झोंको स थक हुए चौपो का नाद आ रहा था ।

मुझे भी जमुहाइया आने लगी । भूख तो कोसो दूर चली गई थी । इतने मे घर का दरवाजा खुला । आभास हुआ कि मुझे बुलाया जा रहा है । आनन्द और आशका स उठकर मैंने बाड का द्वार अच्छी प्रकार बद किया और खखारा करते धीर धीर घर म गया । आगन मे एक खाट पडी थी । मैं जाकर उस पर बठ गया । वह थाली म भोजन लेकर आई । मरा दिल सौ-सौ हाथ उछलने लगा । मैं उसकी ओर देखकर बोला 'बुरा तो नही माना ना ?'

वह मुस्करा कर बोली "ना"

उसने हाथ म थाला लेकर खाट पर बठ ही भोजन करना शुरू कर दिया और खाट के पताने की ओर इशारा करके कहा—"यहाँ बठो !

वह शाति से बैठ गई। खाट थोडी हिली। मैं रोटी खाते-खाते बोला—'मेरी दोपहर वाली बात का बुरा मत मानना।" उसके सामने देखकर कहा "यह तुम्हारा रूप ही एसा जुल्म ढाने वाला है जो मन के बाध तोड देता है।'

वह भारी मन से बोली "मैं तो किसी के भी काम की नही हू।

मेरे मुह का ग्रास नीचे गिरता गिरता बचा। ऊपर के दात ऊपर और नीचे वाले नीचे। "क्या, यह क्या कहा? तुझमे क्या कमी है जिसस तू किसी के काम की नही।'

वह खाट की रस्सी को कुरेदती बोली, 'मेरे मन के घाव क्यो कुरेदते हैं? यह तो एसे ही दुखता रहता है। सेट तो जरूर नही रहा है पर बाकी कुछ नही है।'

मेरे हाथ का ग्रास छूट कर थाली मे गिर गया। हाथ धोकर थाली नीचे रखते हुए कहा—'तुम सारी बात बताओ। मैं इतजाम करूगा।" मेरा हाथ स्वत ही उसकी ओर बढने लगा तो हाथ पर काले नाग का सा झटका लगा और वह बोली 'मेरे हाथ मत लगाओ। दूर से ही बात कीजिए।

१२

मैं झटका खाकर चुप हो गया। 'तू बना तेरे साथ क्या वीती ?

वह थोडी तन कर बठी और कहने लगी यह बात और किसी को मत बताना। आप जिद कर रहे हैं तो आपको बता रही हू। वह बताने लगी, "आज से कोई तीन चार वर्ष पहले मैं गौने के पश्चात ससुराल जाकर वापस आई थी। वापस आये मुझे पाच सात दिन ही हुए होगे कि एक दिन सायकाल मैं पश्चिम वाले खेतो से आ रही थी। इतने में मेरे पीछे से भय कर आधी आती दिखाई दी। मैं दौडती दौडती भरू की टेकरी के पास तक पहुची तो आधी ने मुझे घेर लिया। ओढनी पकडती तो घाघरा उडता और उसे पकडती तो ओढनी मुझ छोड कर भागने लगती। घाघरा ऐसे उडने लगा जसे कोई उसे पकड कर खीच रहा है। यदि उस टागो के बीच में दवा कर चलना चाहू तो चला नहीं जा सकता। मिट्टी उड उड कर ऐसे आ रही थी कि आखें स्वत ही बद हो जाती। कान बहरे होने लगे। हाथ को हाथ दीखना बन्द हो गया। एकदम अधेरघुप्प—काली पीली अमावस्या का सा दृश्य था। न तो आगे चला जाता और न पीछे। एकदम अधेरा हो जाने के कारण मैं एक खेजडे को बाहो में पकड कर खडी हो गई। थोडी देर में मेरी चेतना एकाएक ही सुन्न हो गई। मुझे ध्यान उस समय आया जब मैंने अपने-आपको भरू की टेकरी पर उसकी गुफा के आगे खडा पाया। टेकरी के चारो ओर आधी उसी गति से चल रही थी। वहा का नीम सूसाट कर रहा था। पर यहा आधी का रूप विकराल

नहीं था। मैं छिपकर देखने लगी कि भैरू क्या कर रहा है ?

'भरू का देखते ही मेरा कलेजा बैठ गया। मेरा शरीर कापने लगा। मैं गिरने लगी इतने म पीछे से किसी ने सहारा दिया। वह मुझे देखकर मुस्करा रही थी। वह मरवी ही थी। उसने कहा—बहुत वर्षों से मिली। तुम्हारे बिना तो साधना ही अधूरी थी। चलो अन्दर चलें।

दरवाजा थोडा खोलकर हम दोनों अन्दर गड। मैं मरवी के साथ या चल रही थी जैसे उसी का अग हू, दो शरीरा म एक हा प्राण हो। मरवा ने कहा—भैरू दूसरी मरवी आ गई है। भरू ने आखें खोलकर मेरा ओर देखा ता उसकी आखो से एक तेज सा निकला और मेरे शरीर का चारो ओर स ऐसे घेरने लगा जसे सूय को प्रकाश पुज।

मैं उसके इशारा मे सारे काम करने लगी। उसकी वह नजर पडते हा मुझे लगने लगा कि उसमे मिलकर एक हा जाना चाहती हू। मरवी ने मेरे सारे कपडे उतार कर मुझे भरू के सामने खडा कर दिया। भरू ने मेरे शरीर पर तेल से चक्र बनाया और कुछ गुनगुन करते हुए अनेक अक्षर भी लिखे— जा तू आज से अन्तर्यामिनि मरवी हो गई। जो कोई भी मनुष्य तुम्हारे साथ सहवास करेगा वह नपुसक हो जायगा। तुम्हारे शरीर म एक चेतना निकल कर उसे नपुसक बनाएगी। मरवी की ओर देखकर बोला—इसे घर पहुचा दो। घर वाले चिन्ता कर रहे होंगे। और वह वापस आसन पर मुगासन म बैठ गया। मरवी मुझे कपडे पहना कर घर ले आई और छोड गई। घर वालो की चिन्ता मिट गई। आसमान ऐसे मालूम होने लगा जैसे मेरे साथ कुछ हुआ ही नहीं था। यह सारी बात साधारण सी मालूम पडती थी। मेरा अन्तमन अत्यन्त खुश था।

थोडे दिन निकले होंगे कि एक रात को मुझे ऐसा लगा कि जैसे मेरे साथ कोई सो रहा है। मैं हडबडा कर जागी देखा कि सचमुच मेरे साथ भैरू सो रहा था और मरवी पास खडी होठो पर अगुली रखे मुझे चुप रहने का इशारा कर रहा था। मैंने आखें मसल कर देखा तो कुछ भी नहीं दीखा। न तो मरवी था और न भरू था। खाट पर हाथ फिरा कर देखा पर वहा कोई नहीं था। पसीना आने लगा। आगन चारो और आखें फाड फाडकर देखा पर कहीं कुछ होता तो दिखाई देता। कर-

वट वदल कर वापस सोना चाहा पर नीद ता कोसो दूर जा चुकी थी। उठकर पग्गाब करने पिछवाडे गई। पग्गाब करके उठी तो मिट्टी म एक गहरा घाव मा नीसा। मार का मुह सा दिखाई दिया। पावो स उस पर मिट्टी डालकर वापस आइ और सो गई। करवटें बदलते-बदलते रात निकल गई।

सुबह मा के साथ दक्षिण वाल खेत म भालने गई तब रास्त म भरवी क दर्शन करने के बहाने मा से अलग चल दी। भरवी मुझे देख कर बडी प्रसन्न हुई। उसने मुझे आसीसें दी। मरे सर पर हाथ फिराया। मा भी प्रसन्न हो गई। दर्शन करके वापस मुडे तब मरी इच्छा हुई कि भोंयरे म जाकर देखू कि भरू क्या कर रहा है? मा के साथ होने के कारण कुछ बोल नही सकी और चुपचाप उसके साथ खेतो की ओर चल पडी। उस रात क बाद मरा मन उदास रहने लगा। सहेलिया मेरा मजाक उडाया करती कि इस ससुराल याद आने लगी है। पर न तो मुझे ससुराल और न सासू का पुत्र ही कभी याद आता था। स्वप्न म भरू आकर चित्त ऐसा खराब कर देता था कि मैं पागल सी हो उठती। भाभिया मीठी चुटकिया लती और भाई साहब स कहता कि ननद बाई को ससुराल पहुचा दो।

जठ का महीना समाप्ति पर था तो एक दिन शाम का घनघोर घटा छाई। सकडो मीलो म वर्षा हुई। मरा भाई दक्षिण के खेत जोतन हेतु गया और पिताजी पश्चिम के। मा तो पिताजी के लिए रोटी ले गई और मैं भाई का रोटी देने गई। भाभी पीहर गई हुई थी। साझ होने से काफी देर पहल तक मैंने खेत म काम किया।

सध्या समय आधी और वर्षा के आसार फिर बन गये। भाई को खेत म छोडकर मैं जल्दी जल्दी घर की [ओर चलने लगा। भरू की टेकरी के पास पहुची तब तक जोरो की आधी के साथ बूदें भी पडने लगी। भीगने से डरती टेकरी पर जाकर भरवी के पास नीम के नीचे खडी हो गई। वर्षा जोरो स होने लगी। पानी जोरो से आता देख भरवी मुझे भोयरे म ले गई। मेरा दिल भी चाहता था कि देखू भरू क्या करता है?

भरू सिद्धासन लगाये साधना कर रहा था। हम दोनो के पाव रखने

ा बोला—भरवी आओ। तुम्हार बिना साधना अधूरो है। घूमते काल-ग्न से ऊचा उठन क लिए वेचर विद्या साध रहा था और उसम भरवी ा साथ रहना जरूरी है। बिजली जारा मे चमकन लगी। बादलो की रज कानो के पर्दे फाडने लगी। पानी की बूदें धारा क समान पड रही ा। ऐसा मालूम पड रहा था जैसे समुद्र ही उमड आया है। भरवी ने मुझे ासन पर बैठा कर मेरे ललाट से नाभि तक दो-तीन बार हाथ फिराया ो ऐसा आभास होने लगा कि नाभि स कोई वस्तु ऊपर उठती और स्तना ़े पास आकर दब जाती है। मैंने भरवी की ठुडडी पर हाथ रखकर हा—मेरे यहा तक काइ चीज आती है और वापस चली जाती है।

भरवी बाली—भरू न इसकी कुण्डलिनी तो जाग्रत की है पर रज ़ी अधोगति हाने मे वह आगे नही बढती है।

मैं चाहती थी कि वह कुण्डलिनी जितनी जल्दी ऊची उठ मुझ उतना ही आनन्द मिले।

भरू ने उठकर मेरी गदन क पीछे रीढ की हडडी पर अगूठा रखा ता लगा कि माथ की सारी नसें सुन हा गइ और मैं अतीन्द्रिय लोक मे जा पहुची हू। भरु हाथ हटाने लगा तब मैंने उसका हाथ पकड कर कहा—यहा स दबाय रखो। मुझे वडा आनन्द मिल रहा है।

भरू बाला—यह सब साधना क कारण हाता है।

मेरे मन से निकला—मैं तयार हू।

भरू बोला—खडी हो जा। भरवी पास ही खडी हो गई। भरू ने मेर शरीर पर हाथ फिराया। मेरे सारे कपडे उतार लिये। भरवी भी मेरी तरह हाकर खडी हा गइ। दानो की पूजा की गई। फिर हम दोना के स्तना से लेकर नीचे तक एक त्रिकाण बनाकर बोला—यह भरव साधना की यानि है। इसे अधोमुख त्रिकाण अथवा अधस्त्रिकाण कहते हैं। इस पर ऊर्ध्वमुख त्रिकोण होना चाहिए तब यह शिवलिंग और जलैरी का स्वरूप बनता है। यह कहकर उसने मेर शरीर पर वसा ही ऊपर मुख वाला त्रिकोण बनाया। पहले त्रिकोण पर इच्छा, **क्रिया व ज्ञान** शक्ति का जप करने के बाद उनके बीचोबीच बिन्दु लगा**कर भाव रूप** पदाथ और नाद का आह्वान किया। फिर मेरी तथा भै

की। वह बोल रहा था— यह देवी तत्त्वबोध को जगाती है, गुण अवगुण का नाश करती है, आनन्द और मुक्ति देती है। फिर शिव और शक्ति को अविभक्त बना देती है। सारा संसार नारी तथा शिवपुरुष में ही बना है। तुम सृष्टि की आदि सर्जन शक्ति हो तथा शिव आदि पुरुष। आदि शक्ति प्रसन्न होती है, प्रसन्न होता है, अधकार भी और प्रकाश भी होती है। उसकी चितवन से मधुरता टपकती रहती है। सितारों का वैभव भी उसी का दिया हुआ है। औरतों का आकर्षण उसी का ही रूप है। पत्नी से प्राप्त सुख उसी का ही नाम है। इसलिये तुममें जो इच्छा क्रिया ज्ञान-शक्ति अलग-अलग रूप में बिखरी हुई है उन सबको ऊर्ध्वमुख त्रिकोण में एक कर दिया है।

वह यह सब बातें कहते हुए मेरे शरीर पर जगह जगह अंगुलियां छुआता तब मुझे ऐसा मालूम होता जैसे मेरे बदन में एक जलन सी हो रही हो और सारा बदन एक साथ ही अन्दर से हिल रहा हो। मेरे शरीर से चेतना का एक पुंज ऊपर उठने लगा। वह अचानक झटका खाकर बीच में ही रुक जाता। मैं मन ही मन चाह रही थी कि मेरु बार-बार मेरे शरीर पर हाथ फेरे। आज तक इस प्रकार किसी ने मेरे शरीर पर हाथ नहीं फिराया। यद्यपि मुझे शर्म भी महसूस हो रही थी पर अन्तर्मन चाहता यही था।

पूजा करके मेरु अन्तर्मन से देवी का ध्यान कर बोला— मेरी धर्म अधर्म की छवि से लगाई गई आग से तुम्हारी इस आग में मैं आहुति देता हूं। यह कह कर वह मेरे साथ खेचर विद्या का अभ्यास करने लगा। तब मुझे अनुभव हुआ कि मेरा रज ऊपर उठ कर मेरी कुंडलिनी को जगा रहा है। मेरु ने जैसे-जैसे कहा, वैसे-वैसे मैं कर रही थी। मेरु हम दोनों के साथ खेचर विद्या की साधना करता रहा। फिर भरवी मुझे घर तक छोड़ गई।

आषाढ़ तक खेतों में बुवाई का काम पूरा हो गया। जेठ को बाजरी हो गई थी। वर्षा अच्छी हो चुकी थी। पिताजी के दोनों खेतों में फसल अच्छी थी। मतीरे (तरबूज) और ककड़ी की बेलें भी बहुत अच्छी थीं।

आषाढ़ की पूर्णमासी का व्रत था। घर में दस-पन्द्रह औरतें इकट्ठी

हुई था। काकी कथा कहने के बाद बातो म लग गइ। सभी औरतें मेरी ता प्रशसा ही करती थी। इतने म मेरी रिश्ते की ताईजी न कहा कि इसके पैदा होने के बाद तो अकाल पडा ही नही। यह ता मेरे जेठ के घर म माताजी का ही रूप है। गाव इस तो देवी का अवतार मानता है। यह हुई कसे, इसका तो मुझ पता नही।

यह सुनकर मैं शम से मरी जा रही थी और उठकर दालान की आर चली गई पर मेरे कान ता इस भेद का सुनने के लिये लग थे। मेरे बाहर आन के बाद मेरी मा बाली—बहुत वर्षों पूव की बात है कि चत्र म माताजी के प्रसाद रूप म लापसी बनाइ थी और इसके पिताजी भोजन करके बाहर गय थे। मैं भोजन करके चरखा कातने बठी था। बैठे-बैठे मुझे झपकी आ गइ। मैं वहा लेट गई। मुझे स्वप्न आया कि देवी मेरे दरवाजे के आग खडी है और मुझे आवाज दे रही है कि दरवाजा खाल, मैं तुम्हार घर आऊगी। मैं नींद म ही बाली—दरवाजा खुला पडा है, आ जाओ। दो-तीन दिन पहले ही मैंने माथा-चोटी धोया था। शाम का भाजन बनाना नहा था। हम दोना का व्रत था और बच्चो को ठडी लापसी खिला दी।

साझ पडते ही बच्च सा गये। इनका पिता अपनी बारी का काम निबटा कर एक पहर रात गय सोन के लिय घर लौटा। मुझे जगा हुआ देख बाला—क्या आज तुझ नींद नहा आइ क्या? मैं बाली—क्या नींद आती? आज तो मेरा मन दिन म आये स्वप्न के कारण बडा उदास है। उन्होंने हसकर मेरी बात को उडा दिया और मर से छेडखानी करन लगे। मैं बाली—मेर ता मन एस ही उदास है और आपको छेडखानी सूझ रही है। वे बाले—आजा सो जाओ। मैं बच्चा का छोडकर उनके पास आकर सो गई। प्रात उठकर बाली—स्वप्न सच ही हागा। उन्होंने हसकर उत्तर दिया—अच्छा है तुम घर म लक्ष्मी लाओगी। उस दिन से ही आस रह गई। पूरे महीना के बाद यह दवी हुई। सारी औरतें एक साथ बोल पडी—सचमुच यह दवी है। इसके जन्म के बाद तुम्हारे दिन अच्छे ही निकले हैं। धीरे धीरे सब औरतें भोजन करने के लिये अपन घरा का जान लगी। बहुए अपन से बडी औरता के पाव लग कर चली गई।

उस दिन के बाद मेरे मन म यह बात बठ गइ कि मैं देवी हू और मरु स मेरा रिश्ता नया होते हुए भी चिर पुरातन है।

थोडे दिन बाद मेरी भाभी आ गई। मेरा पिता व भाइ अलग अलग ढाणियो म रहने लग। अब मेरा मरु की टेकरी पर जाना बहुत बढ़ गया। औरतें लुक छिपकर मेरी बात करती पर मरु के विरोध म कोई किसी को कुछ कहती नही।

मेरी रात रात भर वहा ही व्यतीत हो जाती। मरु हम दोनो के साथ बारी-बारी से बात करता जाता। वह कभी थकता नही था। खेचर विद्या की साधना रात रात भर वह करता रहता। कभी कायवश या भूल चूक से दो चार दिन म टेकरी पर नही जाती तो भरवी रात विरात बुलाने आ जाती। मेरा भी रूप निखरने लगा। शरीर मे एसा आकषक बढने लगा कि मरु स मिले बिना मुझे भी चैन नही पडता। मरु के कारण ही मेरी चेतना जागी। मेरे बदन का आकषण किसी को भी मूख बना सकता है। मेरा रूप रस दूसरे आदमी को चेतनाहीन कर सकता है। यह विद्या मैंने मरु स सीखी।

एक रात मैं एस ही भरवी के पास सो रही थी। मैरू साधना कर रहा था। अचानक वह उठा और बोला—भरवी अब इस थोडे दिन छूना नहा है। यह ससुराल जावेगी। मैं यह सुन कर सुन्न रह गई। ऐसी तो कोई बात है ही नही। मुझे तो कुछ भी पता नही था। पर यह कह कर मरु भरवी के साथ साधना करने लगा। प्रात जल्दी ही भरवी मुझे घर पहुचा गई। दो तीन दिन बाद मुझे ससुराल से लने आ गये। मैं ससुराल चली गइ।

मैं गूगा-सा सारी बात सुन रहा था। मरे मन म भगदड मची हुई थी कि यह कही मुझे न मार दे। इसके हाथ का एक झटका तो मैं भुगत ही चुका हू। कहा दूसरा झटका लग गया तो मेरा मरना ही हो जायगा। मैं धीरे धीरे खिसकने लगा। तब वह हसकर बोली—कारकून जी! एस क्या मैं डाकिन या चुडल हू? बहन-बेटा का सम्बध रखने वालो का तो हित ही करती हू। मैं मन म सटपटाया और बोला—हा, आगे क्या हुआ? कहो! वह कहने लगी—

'ससुराल म रात को मुझे उनके पास सुला दिया। व बातचीत करते करत मर साथ छेड़खानी करन लगे तब मैंने उनके कान म धीरे से कहा— मैं नई-नई आई हू। इस प्रकार मर साथ छेड़खानी करोगे तो मैं मा का आवाज दे दूगी। मा के नाम से वे थाड़े डरे और बोले—यह काम मत करना। पिताजी क्या समझेंगे? तब मैं बोली—सीधे-सीधे सो जाइये। वे करवट बदल कर सो गये। मैंने उनकी पीठ पर हाथ फेर कर उन्ह सुला दिया।

चार-पाच दिन यो ही निकल गये। मेरा मन बड़ा उदास रहता। यह तो धम से मेरा अधिकारी है और भरू जन्म से। इन दोना का एक साथ कस निभा सकती हू? यह पाप और पुण्य का मार्ग होना है। मैं इनके लिए अयोग्य हू पर मेरी जीवन साधना यो ही चलती रही तो यह एक निरीह प्राणी, जो साधारण रूप स भी जी नहा सकता मेरे साथ रमण करते ही यह हिजड़ा (नपुसक) हो जायेगा। धम स यह मेरा पति है पर कम स तो भरू है। हमेशा रात को एक सा ही व्यवहार चलता रहा और इनका पुरुषत्व भूखा ही रह जाता। ऐसे करते कइ दिन निकल गये। उनका मह उदास दीखन लग गया।

एक दिन मैंने भरू को याद किया। उसने कहा कि जा तू इसका सवस्व नहीं पर चतना द दे। तुझे शीघ्र ही घर स निकाल देगा। तुम किसी के काम की नहीं, सिवा मेरे। मैं हटवड़ाकर जागी। मैंने उन्ह अपनी ओर किया तथा चिपककर सो गई। थाड़े दिन तो व बहुत खुश रहे। धीरे धीरे उनके सामने मेरा विकृत स्वरूप प्रकट होने लगा। उनके बदन म हड्डिया चमकने लगीं। उनके परिवार वाले मुझे सोखता चुड़ल समझने लगे। इसका फल यह हुआ कि वे मुझे चुपचाप पिताजी क यहा छोड़ गये। मैं आज अपने पिता के घर बठी हू। भरवी साधना करती हू। पर मेरा मन यहा भी नहीं है। रात दिन खेचर क्रिया म ही लगा रहता है। मेरी इच्छा होती है तभी उठकर यहा चली आती हू। मेरा शरीर आत्मा स अलग हो जाता है। धरती से प्राणवायु अलग करके शरीर को आकाश म ऊचा उठा सकती हू। आप कभी देखना चाहे तो टेकरी पर आकर देख लेना।

मैं कापने लगा। वह हँसकर बोली -- ये मर्द हैं, जो नाम से डरने लगे। वह झिझक कर बोली---अब मरघी टंकी में चल पड़ी है। आप जाकर सो जाओ। मैं तो मैम की टकरी पर जाउगी। यह कहती वह उठ खड़ी हुई। मैंने उसे मन ही मन नमस्कार किया और चौकी पर आकर खाट पर बैठ गया।

१३

सारी रात आखा म ही निकल गई। उसे जाते देखा और प्रात आते देखा। पर उसकी चाल स तो यह मालूम नही पड रहा था कि वह रात भर की जगी हुई है। शरीर स भी थकान के लक्षण नही दीख रहे थे। दिन भर घर का काम करती रहती और रात भर खेचर विद्या की साधना करती रहती तो भी उसके मुह पर कभी सुस्ती नही रहती। रात दिन उसका मुह चाद सा चमकता रहता। मेरे मन म तो भय गहरा बैठ गया कि कहा पहल जसी भूल हा गई तो मारा जाऊगा। मैं रात भर उसके बारे म और मरू क बारे म सोचता रहा। और मुझे यह भय भी सताता रहा कि कहीं यह सारी बात जा इसने मुझे कही है, मरू को पता न लग जाय। नही तो वह मुझे खा लेगा। थोड दिन या ही चिन्ता मे निकल गये। एक दिन मैं गाव की वसूली को गया। सुबह खेतो म निकल जाता, आधी रात के बाद कभी किसी ढाणी म गुजारा कर लेता और कभी ऊटनी की पीठ पर ही। ऐसे करते-करते कई दिन निकल गये।

एक दिन ठीक सन्ध्या के समय गाव मे आने लगा तो दूर स ही झोपडे लीपे हुए से लगे। गाव मे और आगे बढा तो मालूम हुआ कि दीवाली आ गई है। आज तो मुझे घर पहुचना चाहिए था। चौधरी के घर के पास पहुचा तो देखा कि उसके दरवाजे के आगे एक दीपक जल रहा है। मेरा मन वापस होने लगा। फिर करने लगा कि जितना जल्दी हो सके गाव पहुचू। भोजन करके चौकी पर सो गया। मुश्किल से रात गुजारी। सुबह

जल्दी ही ऊटनी पर सवार होकर गाव की ओर चल पडा।

रास्ते म देखा कि बाजरी की सिट्टी खेतो म तोडी जाने लगी है। मोठो की लावणी मे पाच-दस दिन बाकी हैं। सारी ही औरतें खेता को छोडकर घरो को नीपने हेतु आ चुकी हैं। गाव म साफ-सफाई हाने और झापडा की निपाई हाने के कारण गाव नये-से दीखन लग थ।

खेता म ककडी मतीरे सितारा का तरह बिखरे पडे थ। काचरो का रग भी अच्छा था। रास्ते म लोग राम राम करत और ब्याळू करने का न्योता भी देत। कहते मतीरा खाओ ! सिट्टा का मारण चबावो ! पर मेरा मन तो उडा उडा था। इस कारण बिना जबाब दिय सीधा अपन गाव की ओर भागा जा रहा था।

रास्त म फली तूबे की बेल म यदा-कदा ऊटनी का पर अटकता तो मैं चेत चत अवश्य करता था। दोपहर क लगभग दिन चढ जाने पर रास्ते मे तालाब आया। वहा उतर कर ऊटना को पाना पिलाया और खुद भी पीया। वापस शीघ्र ही चल पडा। सध्या काल स पहले ही गाव क समीप पहुच गया। दिल म सतोष हुआ कि मैं गाव पहुच गया हू। दीया-बत्ती हुई तब तक मैं गाव के भीतर प्रवेश कर चुका था।

आज कानी (छाटी) दीवाली थी। यदि मैं आज नहा पहुचता तो मरी मडी खाली ही रहती। चाक म बच्चे लूणाघाटी खेल रह थ। मैं तो ऊटनी पर चढा चढा हा घर के दालान म पहुच गया। मरी मां को जब मेरे आने का पता लगा ता वह बडी खुश हुई कि त्याहार पर बेटा घर आ गया। इससे बढकर उसक लिए क्या खुशी था ? ऊटनी का जान उतार कर उसे आगण पर बाधा। जौन का छाण क पास रखकर उसे नीरने जाने लगा ता पिताजी मिल। पाव छुए। पिता बोले—मेरा मन बडा अटपटा हाना यदि तू आज नहा आता। मरे ता सार काम ही फीके रहत। मैं ऊटनी का नीर दूगा। तू हाथ मुह धाकर भोजन कर।

मैंने घर म जाकर मा के पाव छुए। मा ने मरे सिर पर हाथ फेरा तो एसा मालूम पडा कि यह स्नेह का हाथ फिरत ही सार दिन की थकान मिट चुकी थी। मा साल के पास बठी थी। वही स बोली—बहू ! चूल्हे पर स गम पानी लाकर इसके हाथ मुह धुलाओ। रसाई मे से खनखनाती

चूड़ियों की आवाज से मालूम हुआ कि पानी तयार है। उसे पानी लाते देख मा साल म चली गई। मैं हाथ मुह धोन लगा तो एक छपाका उसके भी लगा दिया। वह बोली—यह क्या कर रहे हो ? मा देख लेगी। मैं बोला—मा तो कभी की साल मे चली गइ। तब उसन अपना घूघट थोडा ऊचा किया और मुझे उसका चाद-सा चेहरा दीखा। इतन म ही दालान म घर म आते पिताजी की आवाज सुनाई दी। वह लोटा रख रसोई मे दौड गई। दौडते समय वह मुझे चिकोटी काट गई। पिताजी ने घर म आकर भोजन परोसने को कहा। मा ने आकर हम दोनो का भोजन परोसा। बडे दिनों बाद अत्यन्त प्रेम स भोजन मिला। मुझे ऐसा लग रहा था कि मा का सारा ममत्व इस भोजन के साथ मेरे शरीर म रम रहा है। मेरी भूख बहुत बढ गई। पर मा के शब्दो म तो मैंने कुछ नही खाया। मैं मा की नजरो म आज भी करधनी बाधे खेलने म लगा रहने वाला बच्चा ही था। यह बात मैं उन्हे कैसे समझाऊ कि आज मैं इस अवस्था को पार कर चुका हू। क्योकि उसकी दृष्टि मे तो मैं आज भी उसी रूप म खेल रहा हू। भोजन करके मैं मोहल्ले म गप शप करने चला गया।

घर का काम पूरा करके औरतें दालान म चौकी पर आकर बैठ गइ और तुलसी के गीत गाने लगी। लगभग दो पहर रात गये मैं घर लौटा और पानी पीया। मा ने कहा— बेटा 'जाकर मेडी म सो जाओ।' लीपा हुआ घर चमक रहा था। गोबर और पीली मिट्टी की भीनी भीनी गध सर्वत्र भरी थी। मेडी म मेरी खाट पर लूकार पडा था। मैं जाकर सो गया।

धीरे धीरे ठड बढने लगी। पावो पर लूकार डाल करवट बदल कर सो गया। हाले होले झपकी की छाया मुझ पर छाने लगी। हाथ की आड देकर दीपक लिये वह धीरे धीरे मेडी म आई। दीपक को रख दरवाजा बद करके वह मेरे पास आई। वह यही सोच कर आई थी कि मैं सो चुका हू। मैं भी पक्के बहानेबाज की तरह नाक बजाने लगा। वह मेरे ऊपर झुकी तो झटके से दोनो हाथो स पकडकर उसे अपने ऊपर डाल लिया। 'यह क्या कर रहे हो ? मैं खुद ही आपके पास आ रही थी।' फिर नाराज होती बोली— इस बार बहुत दिनो से आये। यदि आप आज भी नहीं आते तो

मैं आपसे कभी नही बालती।' मैं उसकी ठुड्डी पर हाथ रखकर बोला—'तुम्हारे बोल बिना मेरा कोई काम पूरा हो नहीं सकता।

थाडी देर म बातें हान लगी। मैं धीरे धीरे उसके सारे शरीर पर हाथ फेर रहा था। उसका पेट थाडा ऊचा उठा हुआ नग रहा था। कमर भी चौडी लगी। मैं जब भी उल्टा सुल्टा पाव धरता ता वह कहती यो क्या कर रहे हो? कचुली म स स्तन फटे पड रहे थे। उसकी कचुली ऊची उठी हुई दीख रही थी। मुह पर कुछ पीली छाया थी। वह मुझ बाहो म भरती ता शिथिल हो जाती। एक सुस्ती की लहर उसके शरीर म दौडने लग जाती। मैं साचता यह क्या हो गया?

वह मेरी आर देख कर मुस्कुराई और आखें मिला कर सरमा गई। उसने मेरे सीने म मुह छुपा लिया। मेरा मोटी बुद्धि म यह बात जब आई और मैं आनन्द स भर गया। बाला— सच?' उसने नीचा मुह किये ही कवल 'हु' कहा। इस हु म उसने सारी बात कह दी। आधी रात बातें करते ही चली गई। मुझे ऐसा मालूम हो रहा था कि मैं इससे बहुत दिनो बाद मिला हू। रात एसे निकल गई जस कुछ मिनट हुए हो। दीपक ता कभी का बुझ चुका था। मेरा मडी म ता दूसरा चाद आ था। उसे भी नीद आ गई। पर मेरा दिल अन्दर से पसीज रहा था। मरवा का एक झटका खाने क बाद मैं तो डरने लगा था कि कहीं ऐसा झटका दुबारा नहा लग जाय। झटके के नाम से ही मेरा शरीर पानी-पानी हो जाता था। उसकी नाक बालने लग गई। मेरा मन बेचैन था। नीद आखो से आभन्न थी। मैं उसकी कमर पर पीठ पर पेट पर हाथ फिराते हुए जब हाथ को थाडा नीचे ले जाता हू तो मालूम पडता है कि एक झटका और लगेगा। सारा शरीर एक साथ ही सुस्त पड जाता। स्तन का अग्रभाग काला पड चुका था। उसे दबाने पर चपदार पदार्थ निकलता। कठ सूखने लग जाते। नीद तो पहाडो पर चढ गई। अन्दर से दिल तिलमिला रहा था। पर क्या किया जाए? मुझ खुद पर अफसोस हुआ कि यह क्या कर दिया।

रात बढती जा रही थी। दिन भर की थकान स शरीर टूटने लगा। तब मैंने कम्बल लेने की सोची। यह साचकर उठा तो देखा कि दरवाजे के पास कोई औरत अन्दर आ रही है। धीरे धीरे परछाई साफ हो गई। हवा

क फटकारे से दरवाजा पूरा खुल गया। दाना मरवी अन्दर आ चुकी थी। मैं हड़बड़ाकर उठने लगा तब होठ पर अगुली रख कहने लगी—'चुप ! सोया रह। मैं भय से पीला पडने लगा। खाट के पास आकर दानो खडी हो गइ। छोटी मरवी बोली—'क्या ? बोलो क्या सलाह है ?" मैं हाथ जोड कर बोला—' आपका आशीवाद चाहिए।' तब तक बडी मरवा ने कहा—जा तू ठीक हो जायगा। तुम्हारे पुत्र होगा। अमावस्या के दिन हम जायेंगी। उस दिन तुम पहुच जाना। यह कह कर व जसे आई थी, वसे ही चली गइ।

मैं तो सटपटा गया। मुह स बोल ही नही निकले। सूना सा सोया रहा। आखो के आग दरवाजा खुला पडा था या उनकी जाते हुए पीठ दीख रही थी। थोडी दर मैं यो ही सूना-सा सोया रहा। ठटी हवा लगी तब मुझे होश आया। मैं उठने लगा तो वह बोली—' यह क्या कर रहे हो ? बहुत दिन बाद तो यह सुख मिला है। —देख दरवाजा खुला पडा है, उस बन्द करके आ रहा हू। पानी पीओगी क्या ? मैं बोला। —यहा तो प्यास साथ साल के बाद ही मिट चुकी। उसने कहा। मैं मुस्कुरा कर उठा। दरवाजा बन्द किया, कुडी लगाई और वापस आकर सो गया। फिर मुझे ऐसा आभास होने लगा जसे मरे बदन मे चेतना का एक साप दौड रहा है। बदन की टूटन जाती रही। चेहरे पर रौनक आ गइ। उसे प्यार करने को मुह नीचा किया। उसने अपना मुह ऊचा कर दिया। मैंने उसे कस कर छाती से लगा लिया।

वह कब उठकर गइ मुझे कुछ मालूम नही हुआ। एक पहर दिन चढा तब दिल का चन मिला।

१४

दिन भर बच्चे डुगडुगिये (डमरू) बजाते रहे। घरो मे स्त्रिया साफ-सफाई करती रही आगन लीपती रही और उस पर सफेदी से गरु स हिर मिचा माडने माडती रही। चौक म लक्ष्मी के पगलिये बनाय और पाटा माड कर लक्ष्मी को बठाया। मेरा सारा दिन गप शप मे ही व्यतीत हो गया। साझ होने लगी। गाव क ऊपर अन्धकार की भीनी भीनी ओढ़नी आने लगी। दीपक जलने लगे। वे सुहागिन की ओढ़नी पर झिलमिलाते सितारे-से लग रहे थे। आसमान म टिमटिमाते सितारे गाव म उतर आये थे। घरा के दरवाजो क आगे रखे दीपक लक्ष्मी का माग निर्देश कर रहे थे। रात गहरा जाने पर लक्ष्मी का पूजन किया। धीरे धीरे गाव क लोग सोने चले गये। मा और पिताजी को धोक देकर मैं मोहल्ले म चला गया।

रात की छाया गहरी म गहरी हो रही थी। दालान मे दरवाजे के आगे जलता दीपक सजग द्वारपाल सा खडा था अपना स्नेह देकर लक्ष्मी का माग उज्ज्वल कर रहा था। दीवाली दौडती हुई सी बहुओ के साथ आई और उन्हें काम से थका कर चली गई। ताज त्यौहार स थकी बहुआ के लिए आनन्द का एक नया माग खोल गइ। पीहर ससुराल आना और जाना। सर्दी से धूजते शरीर म एक सपाट सन्नाटा भर रहा था। थकान का और उसक साथ एक निश्चल मन का भारी भरकम भार यहा आकर पड रहा था। यह सारा धन्धा पूरी सर्दी तक चलता रहेगा। जब तक फगुआ हवा का झोका नही लगेगा झरोखे म बठा देवर भाभी को नहा निरखने

लगेगा, चग पर थाप नहीं पडेगी, होली की हुडदग नही होगी। इन सबके साथ एक उज्ज्वल भविष्य की कामना करती शीतला माता के गीत गान लग जावेंगी।

मैं यह सोचता हुआ मीठे कुए की सारण के पास आ गया। कुए की मडो पर जलता दीपक पनिहारिना का माग प्रशस्त कर रहा था। पर अभी न तो पनिहारी था न उनकी नेवरी की भकार। सूनी सारण म सू-सू करती पवन घूमती थी। लबालब भरी खेलिया पशुओ का इतजार कर रही थी। घडाई म भरा पानी किसी सुहागिन की चूडिया की आवाज स अपनी चुप्पी मुखरित करना चाहता था। पर अभी यह सारा सपना था। आसमान म चमकत तारे हिलने पानी म सौ सौ हाथ नीचे जात दिख रहे थे। पवन के साथ हिलता भूग भूत की भयानकता की छाया डाल रहा था। धीर धीर बढती ठड मुझे घर जाने के लिए कह रही थी। मैं चित्त-भ्रमित सा भटक रहा था। कभी तारा का देखता कभी सूनी सारण का, और इन सबसे दूर बहुत दूर एक दूसरा ही चित्र दीख रहा था जिसमे दो मरवी खडी थी एक भम्म और उनके साथ भ्रमित हुआ एक कारकून। खिलखिलाहट करती आ रही मरवा और उनके पीछे आती एक छाया और इन सबके पीछे एक जलती लौ मेरे मन पर पडती सो मन की शिला का उठा देती है। मैं आराम स सास लने लगता हू।

मरे कान क पास सुनाई देता है। कारकून ! क्या सोच रहा है ?' भम्म का एक प्रश्न भरी आवाज मुझे सुनाई दती है। मैं कहू उससे पूव ही और सुनाई दता है जा, घर जा तरा इतजार हो रहा है।' और मैं उत्तर दिय बिना ही चुपचाप घर का चल पटता हू। धीर धीरे बढ रही ठड मर बदन पर एक थपकी लगा जाती है। मैं भारी मन स घर की आर पहुच जाता हू।

दालान म झिलमिलाना दीपक मुझे मडा म इतजार कर रहा पत्नी का याद दिलाता है। मरे पाव शाघ्रता स उठने लगते हैं। मुझे ऐसे लगता है जस भम्म मुझे घर क दरवाजे तक पहुचा कर वापस चला गया था। मैं पाछे दखता हू पर मुझे वहा कुछ दिखाइ नहीं देता। गहरी काली रात म मेरी खुद की छाया के अलावा और कुछ नहा दीखता। मैं भ्रम म भरा

काई कुछ। मेडता का राज्य काफी दिन अधर म लटकना रहा। सरदारो के प्रभाव से बीरमजी की ताक्त बढ जाती तो कभी सावलदवजी का मौज बन जाती। सरदारो ने दानो म लूट मचा रखी थी। राज्य की निगरानी म गडवड हो जान स पूरा लगान ही वसूल नही किया जिससे मैं झमल मे पडने से बचा रहा। मैं चुपचाप हा रहता। किसी भी हरकारे से मिलना ही नही चाहता। और यह सब साच कर तय किया कि दाना का झमेला मिटेगा तभी लगान इक्ट्ठा करूगा नही ता इस झगडे म दूसरा का अहित हा जायगा। अपना कुछ लना न देना। लगान का हिस्सा तो जितना मिलना है उतना ही मिलगा। यह नही हा कि कही मारा जाऊ। इसलिए साच विचार कर पग रखता। दोनो क हरकारे भिखारी की तरह आते और आग चल जाते।

एक दिन समाचार मिला कि राजा सावलदव न जोधपुर के राजा मालन्व की मन्द से बीरमदेव को मटते स भगा दिया। दा एक दिन पहल वे डीडवाना के रास्ते सीकर होना हुआ बादशाह शेरशाह की शरण मे चला गया। मन राजी हुआ कि पिड छूटा एक राजा दा राज्य हा सुख देगा।

धीरे धीरे हरकारे घूमन लग। राजा सावलदेव का राज्य पक्का हा गया। रास्ता का व्यापार धीरे धीरे चालू हा गया। मडता का माग भरा रहन लगा। आगरा दिल्ली का व्यापारी इस रास्त स अपना सामान वापस भेजने लगे। वह सामान मडता पाली से जालौर हाता गुजरात चला जाता। वहा स आग यह सामान भारत स बाहर चला जाता। मडता के दोना रास्त खुल गये।

अब हालत सुधरने स मैं भी लगान इकटठा करने लगा। मैं जिन गावा का कारकून था वे सारे खालस क गाव थे। उनमे कोइ ठाकुर या सरदार नही थे। मेरा सम्बन्ध सीधा मेडता के कामदार स था। मेडता का आदमी आता और लगान का सामान लेकर चला जाता। इसलिए मेडता जान का काम कभी नहा पडता।

मेरे गावो म दोनो तरह का लगान चालू था। उन्हालू लगान और सीयालू लगान। मेरे गावो म तो सावणू लगान भी चालू रहता क्योकि

सर्दी म न ता वर्षा होती और न अनाज बोया जाता। इसलिये वप मे एक ही लगान लेना पडता वह भी पिछले दो वप स अकाल पडन के कारण राजाजी ने माफ कर दिया।

एक मन क पीछे एक सेर लगान लिया जाता था। एक सर अनाज मुझे अनाज की तुलाई का मिलता जिसे सेरणू कहा जाता। बचकी लाग भी इस वार साथ ही लेनी थी। मेतो मे जब सिट्टे ताडे जाते तब यह राजाजी के नाम से लिया जाता। इस प्रकार हम तीना लगान एक साथ लेत। जिसम मुझे लगान के निय अधिक नही घूमना पडता। राज्य का लगान एक साथ ही नियत स्थान पर पहुच जाता। जो गाव खालस नही थे उनमे ठाकुर अधिक लाग लगात। इस कारण ठाकुरा के गावा के किसान गरीब रहन। गाव म जब कोई नाता करता ता नाते का एक नारियल राजाजी का मजूरी का मेरे पास आता। नारियल देने का मतलब यह होना कि राजाजी का मजूरी हा गई है। किसी के पुत्र का विवाह होता ता मैं एक टका विवाह लगान लेने जाता। इस वार फसल अच्छी होने से विवाह अधिक होंगे। इसलिय यह लगान भी अधिक मिलगा।

टका (रुपया) फिरगीमी, जा चादी का बनता और बाजार म चलता। इसके भावा का पूरा ध्यान रखना पटता कारण कि यह चौन्ह आन का होता और कभी इसका भाव बीस आन तक हा जाना। इसलिये हरकारे भाव चढन और घटन क समाचार बार-बार द जाते। नही तो हम यह पता नहा चल पाता कि भाव क्या है? पर हम आमतौर पर टके का भाव चौन्ह और पन्द्रह आना मान कर चलते। और इस हिसाब से ही हम सारा लगान लन। इसक ऊपर ही सारा हिसाब रहता। आते जाते व्यापारियो से भी हम टक क भाव का पता चलता रहता।

लगान दाना तरह का लिया जाना था। अनाज क रूप में भी और टके के रूप म भी। इसलिय हम अनाज के भावा का भी ध्यान रखना पडता। बाजरी का भाव एक मन क आस पास था। बजरडे का भाव एक मन पाच-सात सेर रहना। बाजरी क भाव स यह भाव पाच-सात सर सस्ता रहना। कारखून की साख क आधार पर उधार लन-देन का धधा

भी चलता पर गांवा मे टका कम से कम होने क कारण अधिकाग सामान का लेन देन टके के हिसाब से अनाज के रूप म ही चलता। उसका ब्याज सौ टका का एक टका होता। बाजार म आना कौडी भी चलत और उनके भाव भी टके के भावा के आधार पर होते। सामान बहुत ही महगा था। टक क दशन कभी कभास होते। सारा लेन देन सामान स ही होता।

कभी कोई फौज गाव के पास स निकलती तो टका-असर्फी गाव म पहुचते। उस समय अनाज व घास के भाव ऊचे हो जाते। गाव की इज्जत सेना की महरवानी पर होती। गाव म गरीबी थी पर खुशी का अभाव नहा था। उनका जीवन एक ढर्रे से चलता है। अकाल पडने मे या फौज के आने जाने स किसानो को तकलीफ हो जाती। गाव म सारे लोग प्रम स रहत। औरतें घर स लेकर खेत तक काम करती। मकान कच्चे थ।

१६

अमावस्या क दिन मैं टेकरी पर पहुचा। सारा गाव वहा इकटठा था भरू मुझे देखते ही बोला—'तुम आ गये ? मैं तुम्हारा ही इतजार कर रहा था।' और उसने आवाज दी—'भरवी जल्दी तयार हो जाओ। अब अपने को चलना है। थोडा देर म ही दोनो भरवी झोपडे से बाहर आ गई। मैं उन्हे देखकर अचभित था। यह नही पहचान सका कि इन दोनो मे कौन बडी है और कौन छोटी ? दोनो के कपडे एकसे और चेहरे मानो तोडकर चिपकाये हो। मैं आश्चर्यचकित दोनो को देख रहा था। भैरू बोला—'ऐसे चमगूग की तरह क्या देखते हो ?' छोटी भरवी की ओर देखकर बोला—'इसे अन्दर ले जाकर झोपडा दिखा दो। जब कभी झोपडे म बठकर मुझे याद कराग तो मैं आ जाऊगा। मैं चुपचाप उठकर झोंपडे मे देखने चला गया। मेरे सर म वे सारी बातें स्वप्न-सी घूमने लगी। धरता पर दीवारो पर मत्र लिखे हुए थे। मत्रो म दोनो भरवी खडी थी। उनके सीनो पर श्रीचक्र लिखे थे। भरू खडा खडा खेचर विद्या की साधना करता था। आखो के आगे अधेरा छा गया। मैं सर पकड कर वही बठ गया। वे कब गये, मुझे कुछ पता नही चला। मैं झोपडे म ठूठ सा बैठा था और मेरे सामने एक दीपक जल रहा था। मैं हार कर उठा और झोपडे से बाहर आया।

दिन निकलने लगा। मैं मिश्रजी की बहियो म खोजता रहा कि आगे क्या हुआ ? पर कुछ पता नही लगा। हार थक कर मैं उठ बठा और दीपक बुझा दिया।

रामनिवास शर्मा

जन्म एक जनवरी सन इकत्तीस
शिक्षा एम ए बी एड, प्रभाकर
लेखन-कार्य हिन्दी व राजस्थानी
कृतियाँ ढळती रात (कहानी संग्रह) पुरस्कृत १९७२ ७३
काल मरवी (ऐतिहासिक तान्त्रिक उपन्यास पुरस्कृत १९८१ (विष्णुहरि डालमिया पुरस्कार से)
मामळ (ऐतिहासिक उपन्यास) श्री पृथ्वीराज राठौड पुरस्कार से पुरस्कृत १९८३ ८४ में।
शोध निबन्ध व कहानियाँ विभिन्न पत्र पत्रिकाओं म प्रकाशित होते रहत हैं। आकाशवाणी से वार्ताएँ व कहानियाँ प्रसारित होती रहती है।
सम्प्रति प्रिंसिपल राजस्थान बाल भारती, बीकानेर ३३४००१ (राजस्थान)